मानिला वाणी

मासिक ई-पत्रिका

पर्व, प्रकृति एवं संरक्षण

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुणीधार,
मानिला- 263 667 (अल्मोड़ा)

अंक- 02। 2025-26

अक्टूबर, 2025

विवरणिका

इस अंक में...

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ सं०
1.	सम्पादक की कलम से...	i
2.	छात्र-छात्रा लेख अनुभाग	1-4
3.	प्राध्यापक लेख अनुभाग	5-25
4.	यात्रा वृतांत	26-29
5.	समसामयिकी	30-32
6.	अक्टूबर माह में जन्मी उत्तराखण्ड की प्रमुख प्रेरणादायी हस्तियाँ	33-34
7.	अक्टूबर माह के प्रेरणादायी व्यक्तित्व (एक जीवन परिचय)	35-36
8.	अक्टूबर माह के महत्वपूर्ण दिवस	37-43
9.	कलाकृति अनुभाग	44-47
10.	लेंस के पीछे	48-50
11.	चित्र दीर्घा (महाविद्यालय उपलब्धियाँ एवं गतिविधियाँ)	51-55
12.	देश दुनिया के कुछ रोचक तथ्य	56-57
13.	कुछ अनुशंसित पुस्तकें	58
14.	रोजगार समाचार	59

संपादक की कलम से...

प्रिय पाठकों,

जैसा कि आप सभी अच्छी तरह जानते हैं, यह अक्टूबर महीना मिली-जुली भावनाओं वाला रहा क्योंकि हमने न केवल हमेशा से चली आ रहे महाविद्यालयी कार्यों का निर्वहन किया, बल्कि सबसे प्रिय और लाड़-प्यार वाले त्यौहारों में से एक दीपावली भी मनाई। इसी बात को ध्यान में रखते हुए मानिला वाणी संपादकीय समिति सबसे पहले आप सभी को शुभ और समृद्ध दीपावली की शुभकामनाएँ देती है।

अब जब हम सभी कार्यों की व्यस्तता और त्यौहार से निपट चुके हैं, हमें विश्वास है कि आप मानिला वाणी मासिक ई-पत्रिका के अक्टूबर संस्करण का आनंद लेने के लिए पर्याप्त स्वतंत्र हैं। आइए देखें कि इस महीने हमारे उत्साही पाठकों के लिए हमारे पास क्या है।

'छात्र-छात्रा लेख अनुभाग' में प्रिय विद्यार्थियों द्वारा लिखी गई कुछ खूबसूरत कविताएँ और लेख हैं। *'प्राध्यापक लेख अनुभाग'* एक बार पुनः हमें रोमांचित करने के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जी के जीवन से जुड़ी जानकारियाँ; अर्थव्यवस्था दुरुस्त करने हेतु बचत एवं निवेश करने की बारीकियाँ; सूचना के अधिकार का प्रयोग; दैनिक जीवन की कुछ घटनाओं के पीछे छिपे आकर्षक विज्ञान; वन्य जीव-जंतुओं और वनस्पतियों के संरक्षण हेतु डब्ल्यूडब्ल्यूएफ-इंडिया द्वारा संरक्षण उत्प्रेरक कार्यक्रम इत्यादि को रेखांकित करता है। साथ ही इस माह का नया खण्ड *'यात्रा वृतांत'* अपनी गद्य-विधा से आप सभी को रोमांचित करने आ रहा है।

इस माह महाविद्यालय में हुए क्रियाकलापों के बारे में अधिक जानने के लिए आप सभी *'चित्र दीर्घा'* पर नज़र डाल सकते हैं। *'कुछ अनुशंसित पुस्तकें'* किताबों की दुनिया में प्रवेश करती है और साहित्यिक दुनिया से सभी का परिचय कराती है। *'रोजगार समाचार'* विभिन्न करियर के अवसर लेकर छात्र-छात्राओं के समक्ष पुनः प्रस्तुत है।

अंत में, इतना कुछ पढ़ने के बाद, हमारा *'कलाकृति अनुभाग'* एवं *'लेंस के पीछे'* ज़रूर देखें और महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं एवं प्राध्यापकों द्वारा उकेरी गईं कुछ खूबसूरत कलाकृतियों तथा प्रकृति के छायाचित्रों का आनंद लें!

हमें उम्मीद है कि आपको मासिक ई-पत्रिका का अक्टूबर अंक पढ़ने में उतना ही आनंद आएगा जितना आपको अपनी बहुप्रतीक्षित दीपावली की छुट्टियों में आया था। दोस्तों, पढ़ने का आनंद लें।

डॉ० जितेन्द्र प्रसाद (प्रधान सम्पादक)
डॉ० शैफाली सक्सेना (सह-सम्पादक)

छात्र-छात्रा लेख अनुभाग

स्वच्छ संकल्प से स्वच्छ सिद्धि

मैं स्वच्छता के लिये क्या करूँगी?

वर्तमान में भारत सरकार ने "स्वच्छता अभियान" चलाया हुआ है, जिसका उद्देश्य पाँच वर्षों में अपने देश को पूर्णरूप से स्वच्छ बनाना है। बापू के स्वच्छ भारत का सपना पूरा करने में प्रत्येक छोटा, बड़ा व्यक्ति सहयोग कर रहा है जिसमें से एक मैं स्वंय भी देश को स्वच्छ बनाने में प्रयासरत हूँ।

जिस प्रकार बूंद-बूंद से सागर बनता है अर्थात छोटे-छोटे कार्यों को पूर्ण करके एक बड़ी सफलता हासिल होती है, उसी प्रकार मैं सर्वप्रथम उन छोटी-छोटी बातों पर ध्यान दूंगी जिससे हमारा देश स्वच्छता की मूरत बन जाए। मैं अपने आस-पास गंदगी नहीं रहने दूंगी, और न ही दूसरों को अपने घरों या मास-पास की गलियों, नालियों को गंदा करने दूंगी। मैं लोगों को सलाह दूंगी कि गीले कचरे को हरे डिब्बे में और सुखे कचरे को नीले डिब्बों में डाले ताकि कचरा घरों की व्यवस्था आसान बन सके और इन गीले, सूखे कचरे को पुन: उपयोग में लाया जा सके।

प्राय: लोग शौचालयों का प्रयोग न करके अस्वच्छता फैलाते है मैं उन सभी को शौचालयों का प्रयोग करने की सलाह दूंगी ताकि हमारा भारत प्रदूषण मुक्त बन सके।मेरा अपने देश के प्रति यह कर्तव्य भी है कि मैं सिर्फ केवल अपने आस-पास की स्वच्छता पर ही ध्यान न दूँ वरन इसके अलावा मैं भारत के जिन-जिन स्थानों पर जाती हूँ, जैसे कि बसों, ट्रेनों, सड़को, रेलवे स्टेशनों, सभी पर्यटक स्थलों, समुद्री बीचो, मंदिरो, नदियों आदि स्थानों को स्वच्छता की दीप से प्रज्जवलित करूँ।

राष्ट्रपिता बापू ने अपने अनमोल वचनों में भी कहा है कि:

"खुद वो बदलाव बनिए जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।"

आकांक्षा रावत
(भूतपूर्व छात्रा)

मैं बोझ नहीं हूँ

शाम हो गई, अभी तो घूमने चलो न पापा,
चलते-चलते थक गई, कंधे पर बिठा लो न पापा।

अँधेरे से डर लगता, सीने से लगा लो न पापा,
मम्मा तो सो गई, आप ही थपकी देकर सुलाओ न पापा।

स्कूल तो पूरी हो गई, अब कॉलेज जाने दो न पापा,
पाल पोस कर बड़ा, किया अब जुदा तो मत करो न पापा।

अब डोली में बिठा ही दिया, तो आँसू तो मत बहाओ न,
पापा की मुस्कराहट अच्छी है, एक बार मुस्कराओ न।

पापा आपने मेरी हर बात मानी, एक बात और मान जाओ न पापा,
इस धरती पर बोझ नहीं में दुनियाँ को समझाओ न पापा।

हंसी
बी०एस-सी० तृतीय सेम०

गाँव

एक गाँव जो आबाद हुआ करता था कभी।
वो शोर-शराबा, हसी-मजाक, रोदन-गायन शान हुआ करता था कभी।
गाँव के लोगों का वो प्रेम,
बुजर्गो की वो डाँट,
गाँव की आवाज़ हुआ करती थी कभी।।

पर पलायन ने वीरान कर दिया है गाँव को।
गाँव की वह मधुर आवाज दबी हुई सी लगती है।
नदियों को वह मधुर तान,
पेड़ों से छनती धूप की किरण, वो हरियाली गायब सी होने को खड़ी है।।

पर अभी भी वो याद है।
जब बढ़ते हैं कदम गाँव से शहर की ओर, तब जकड़ लेती है मिट्टी पैरों को।
वो धूप-छाँव, खेती-बाड़ी, नदियाँ-चिड़िया,
गाँव की खुशियाँ हुआ करती थी कभी,
वो गाँव जो गाँव हुआ करता था कभी।।

कार्तिकेय बिष्ट
बी०एस-सी० प्रथम सेमेस्टर

‘युवा माँगे जवाब अब’

भर्ती निकले तो इम्तहान नहीं परीक्षा हो तो परिणाम नहीं, परिणाम निकले तो joining का नाम नहीं। आखिर क्यों युवाओं का सम्मान नहीं?

बस करो मजाक अब युवा माँगे हिसाब अब बात करो, संवाद करो दो हमारे प्रश्नों का जवान अब।

क्यों हर भर्ती पंचवर्षीय योजना है? किस नए भारत की ये परियोजना है? कैसी ये परीक्षा प्रणाली है? आपने युवाओं की छीन ली जवानी है।

क्यों पेपर में गलत सवाल डालते? फिर 100-100 रु० का व्यापार करते Rank list का नहीं प्रावधान करते Waiting List का नहीं समाधान करते साहब, दो-चार हो तो बोलूँ.. अरे आप तो जुल्म हजार करते।

कहना है जागो सरकार जागो, बस यही कहन हमारी समस्याओं पर ध्यान दो 1 वर्ष के भीतर पुरी प्रक्रिया हो Rhea नहीं, बस नौकरियाँ हो।

युवाओं से भी कुछ कहना है, अब और नहीं सहना है। बुलंद अपनी आवाज़ करो, आज कुछ ऐसी हूँकार भरो। आ जाए चाहे सैलाब अब रुकना नहीं, झुकना नहीं अपने हको को करना है हिसाब अब ।।

तनुजा शर्मा
बी०ए० तृतीय सेमेस्टर

घास

मैं घास हूँ,
मैं आपके हर किए-धरे पर उग आऊँगा।

बम फेंक दो चाहे विश्वविद्यालय पर,
बना दो होस्टल मलबे के ढेर,
सुहागा फिरा दो भले ही हमारी झोंपड़ियों पर,
मुझे क्या करोगे ?
मैं तो घास हूँ, हर चीज ढक लूँगा,
हर ढेर पर उग आऊँगा।

बंगे को ढेर कर दो,
संगरूर' को मिटा डालो,
धूल में मिला दो लुधियाना का जिला,
मेरी हरियाली अपना काम करेगी...
दो साल, दस साल बाद,
सवारियाँ फिर किसी कंडक्टर से पूछेंगी,
"यह कौन-सी जगह है?
मुझे बरनाला उतार देना,
जहाँ हरे घास का जंगल है।"

मैं घास हूँ, मैं अपना काम करूँगा,
मैं आपके हर किए-धरे पर उग आऊँगा।

तनुजा नेगी
बी०ए० प्रथम सेमेस्टर

पहाड़ों पर अत्याचार

पहाड़ म्यार पहाड़ (देवभूमि उत्तराखण्ड),
बड़ू अत्याचार,
पहाड़ों मा नि रै गे, अब कोई कारोबार।
और पहाड़ क लोगूल बंद कर यलि अपर घर कूणी का द्वार।

नेताओं ल भी कर यली यख भ्रष्टाचार,
नि करा पहाड़ों पर अत्याचार,
दिल्ली जाड़क सब थे चड़ी बुखार,
और भयानक लोगुक शुरु कर यल यख व्यापार।

भू-कानून बड़्डक भी नि रै गे आश,
और भू-माफियाओल कर अल पहाड़ों क नाश,
नि करा पहाड़ों पर अत्याचार।

त चला अब हम लोग सब मिलकर,
बचोला अपड़ प्यारु पहाड़,
अपड़ प्यारु जन्मभूमि।
तुम्हार संघर्ष, तुम्हार साथ, जय देवभूमि!

द्वारा रचित- मीनू नेगी
बी०एस-सी० पंचम सेमे०

प्राध्यापक लेख अनुभाग

(3 मिनट का पठन)

“अहिंसा परमो धर्मः।”

“अहिंसा परमो धर्मः।” यह सिर्फ एक प्राचीन सूत्र नहीं, बल्कि मानवता के हृदय में गूंजता एक शाश्वत आह्वान है। यह एक आध्यात्मिक क्रांति का मंत्र है, जो शारीरिक हिंसा की सीमाओं से परे जाकर, मन, वचन और कर्म से समस्त जीवों के प्रति करुणा, प्रेम और सम्मान का भाव जगाता है। यह आधुनिक युग के कोलाहल और संघर्षों के बीच भी अपनी प्रासंगिकता को सिद्ध करता है, जब हमें नफरत, हिंसा और अविश्वास के ज़हर से निपटने की सख्त ज़रूरत है।

आदि से अनन्त तक: अहिंसा का दार्शनिक विस्तार

अहिंसा को सिर्फ शारीरिक क्षति से परहेज के रूप में देखना इसकी गहराई को कम आंकना है। यह तीन स्तरों पर जीवन जीने का एक व्यापक दर्शन है, जो हमारे अस्तित्व के हर पहलू को प्रभावित करता है:

- **मानसिक अहिंसा:** मन में किसी के प्रति घृणा, द्वेष या बदले की भावना न रखना। यह आत्म-शुद्धि का पहला कदम है, क्योंकि हमारे विचार ही हमारी क्रियाओं को जन्म देते हैं।
- **वाचिक अहिंसा:** किसी को कटु या अपमानजनक शब्द न कहना। हमारे शब्द में शक्ति होती है; वे किसी को भी गहरा आघात दे सकते हैं। इसलिए, वाणी में मधुरता और संयम लाना आवश्यक है।
- **कायिक अहिंसा:** किसी भी प्राणी को शारीरिक पीड़ा न पहुँचाना। यह अहिंसा का सबसे स्पष्ट और जाना-पहचाना रूप है।

धर्मों का महासागर और अहिंसा की धारा

भारतीय दर्शन में अहिंसा एक केंद्रीय स्तंभ रहा है। जैन धर्म में, अहिंसा को सर्वोपरि सिद्धांत माना गया है, जिसका पालन न केवल मनुष्यों बल्कि सभी जीवों के प्रति किया जाता है। हिंदू धर्म के पवित्र ग्रंथ, जैसे महाभारत, भी "अहिंसा परम धर्म" के महत्व को दोहराते हैं। हालांकि, यह भी स्वीकार किया गया है कि धर्म और न्याय की रक्षा के लिए कुछ परिस्थितियों में हिंसा आवश्यक हो सकती है, लेकिन इसका मूल भाव अहिंसा की स्थापना ही है। बौद्ध धर्म में भी अहिंसा का गहरा महत्व है। बुद्ध ने सिखाया कि हिंसा से उत्पन्न होने वाला क्रोध और घृणा मन को दूषित करता है, जबकि अहिंसा मन को शांति और करुणा से भर देती है।

महात्मा गांधी: एक युगपुरुष जिसने अहिंसा को शस्त्र बनाया

बीसवीं शताब्दी में, महात्मा गांधी ने अहिंसा को एक निष्क्रिय सिद्धांत से निकालकर, एक शक्तिशाली राजनीतिक हथियार के रूप में प्रस्तुत किया। उनके सत्याग्रह आंदोलन ने दुनिया को दिखाया कि अहिंसक प्रतिरोध कितना प्रभावी हो सकता है। गांधी के लिए अहिंसा केवल एक रणनीति नहीं थी, बल्कि एक जीवन शैली थी, जो व्यक्ति के भीतर के आध्यात्मिक बल को जगाती थी। उनके सिद्धांतों ने दुनिया भर के नेताओं जैसे नेल्सन मंडेला और मार्टिन लूथर किंग जूनियर को प्रेरित किया।

आधुनिक परिदृश्य में अहिंसा की प्रासंगिकता

आज, जब दुनिया परमाणु हथियारों के साये में जी रही है, और राष्ट्रों के बीच तनाव चरम पर है, अहिंसा का

महत्व और भी बढ़ जाता है। वैश्विक शांति और सद्भाव के लिए यह एक अनिवार्य शर्त है। यह केवल एक व्यक्तिगत नैतिक सिद्धांत नहीं है, बल्कि एक ऐसा रास्ता है, जो हमें विनाशकारी संघर्षों से बचा सकता है। यदि हम अहिंसा के मार्ग पर चलें, तो एक ऐसे समाज का निर्माण होगा, जहाँ लोग सद्भाव, प्रेम और सहिष्णुता के साथ रह सकेंगे।

उपसंहार: एक नया सवेरा

"अहिंसा परमो धर्मः" आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना युगों पहले था। यह हमें सिखाता है कि शक्ति का वास्तविक स्रोत क्रूरता या हिंसा में नहीं, बल्कि करुणा और धैर्य में निहित है। यह एक ऐसा आदर्श है, जो न केवल हमारे व्यक्तिगत जीवन को पवित्र करता है, बल्कि एक सुंदर, शांत और समतावादी विश्व के निर्माण का मार्ग भी प्रशस्त करता है। हमें इस शाश्वत सूत्र को अपने जीवन में उतारकर एक ऐसे नए सवेरे की शुरुआत करनी होगी, जहाँ हर प्राणी शांति और सम्मान के साथ जी सके।

डॉ० जितेन्द्र प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर
भूगोल विभाग

वित्तीय लक्ष्य की प्राप्ति: बचत और निवेश

(3 मिनट का पठन)

एक ज़माना था जब बचत का मतलब होता था खर्च के बाद अपनी आय में से बचा हुआ पैसा। दूसरी ओर, समझदार बचतकर्ता अपनी आय का एक बड़ा हिस्सा पहले बचाते हैं, फिर बचे हुए पैसे को खर्चों में लगाते हैं। इस छोटे से बदलाव से, वे नियमित रूप से और अधिक बचत कर पाते हैं। लेकिन, सिर्फ़ पैसे बचाना अब फायदेमंद नहीं रहा, खासकर जब मुद्रास्फीति उसे खा जाती है।

उदाहरण के लिए, अगर आप एक दशक तक अपने पास 10,000 रुपये रखते हैं, जब मुद्रास्फीति दर 6% है; तो दशक के अंत में इसकी कीमत सिर्फ़ 5,584 रुपये होगी! ऐसे समय में जब बचत बैंक खाते और सावधि जमा से मिलने वाले निश्चित गारंटीकृत रिटर्न लगातार कम हो रहे हैं, आपकी बचत को भविष्य में अपना मूल्य बनाए रखने के लिए मुद्रास्फीति के अनुरूप लाभ अर्जित करना ज़रूरी है। हालाँकि, आपके भविष्य के वित्तीय लक्ष्य भी हैं, जिनके लिए आपको अपनी ज़रूरत के अनुसार मूल्य प्राप्त करने के लिए मूल्य में वृद्धि करनी होगी।

वित्तीय लक्ष्य अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग मायने रखते हैं। यह शादी के लिए पर्याप्त बचत करना, कर्ज़ कम करना या फिर दो दशक बाद होने वाली सेवानिवृत्ति के लिए बचत करना हो सकता है। वित्तीय लक्ष्य निर्धारित करने का महत्व आपकी बचत को सार्थक बनाना और बचत को अपने वित्तीय लक्ष्यों तक पहुँचने की दिशा में लगाना है। यह जानना मददगार होता है कि आप अपनी बचत का क्या करना चाहते हैं, और अगर आपके लक्ष्य स्पष्ट रूप से निर्धारित हों तो यह कारगर हो सकता है। इसलिए, 2026 में विदेश में पारिवारिक अवकाश की सूची बनाने के बजाय, इसके साथ एक लागत जोड़ना बेहतर होगा– 2026 में यूरोपीय अवकाश के लिए 4 लाख रुपये।

ऐसे कई ऑनलाइन टूल उपलब्ध हैं जो आपको अपने वित्तीय लक्ष्य तक पहुँचने के लिए हर महीने आवश्यक बचत की गणना करने में मदद कर सकते हैं, जो बचत से मिलने वाले अपेक्षित रिटर्न पर आधारित है। नियमित रूप से बचत और समय के साथ अनुशासित तरीके से इस राशि का निवेश करने से आपको अपने लक्ष्य तक पहुँचने में मदद मिल सकती है। आप म्यूचुअल फंड में निवेश कर सकते हैं, जहाँ आपको विभिन्न परिसंपत्ति वर्गों में निवेश के व्यापक विकल्प मिलेंगे, जो आपके जोखिम प्रोफ़ाइल और निवेश की समय-सीमा को पूरा करते हैं। ऐसे फंड उपलब्ध हैं जो अल्पकालिक, मध्यम और दीर्घकालिक वित्तीय लक्ष्यों के लिए उपयुक्त हैं और जिनमें अलग-अलग जोखिम स्तर होते हैं।

इसके अलावा, आप म्यूचुअल फंड में निवेश करने के लिए इसकी सुविधा और संरचना के लिए एक व्यवस्थित निवेश योजना या SIP का उपयोग कर सकते हैं। चूँकि अधिकांश लोगों को मासिक आय प्राप्त होती है, इसलिए वे म्यूचुअल फंड में निवेश करने के लिए SIP का रास्ता चुनकर अपने वित्तीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए मासिक निवेश चक्र का उपयोग कर सकते हैं। इससे आपके बचत अनुशासन में सुधार होता है - आप न केवल नियमित रूप से बचत करते हैं, बल्कि नियमित रूप से निवेश भी करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप 20 साल बाद 1 करोड़ रुपये का रिटायरमेंट फंड बनाना चाहते हैं; तो इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए आपको हर महीने 10,010 रुपये का निवेश करके 12% वार्षिक रिटर्न प्राप्त करना होगा।

पैसे की बचत वित्तीय सुरक्षा हासिल करने की पहली सीढ़ी है। अपने वित्त पर नियंत्रण रखने के लिए, अपनी वर्तमान और भविष्य की वित्तीय स्थिति को सुरक्षित करने के लिए, एक स्मार्ट बचत की आदत डालें।

अनियोजित खर्चों के प्रलोभन को कम करने के लिए अपनी बचत और निवेश को स्वचालित करने की आदत डालें। आप पाएंगे कि आपकी बचत आपके लिए तभी कारगर साबित होगी जब आप सही निवेश विकल्पों का चयन करेंगे जिससे आपको अपने सभी वित्तीय लक्ष्यों को समय पर पूरा करने में मदद मिलेगी।

वित्तीय लक्ष्य अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग मायने रखते हैं। यह शादी के लिए पर्याप्त बचत करना, कर्ज़ कम करना या फिर दो दशक बाद होने वाली सेवानिवृत्ति के लिए बचत करना हो सकता है। वित्तीय लक्ष्य निर्धारित करने का महत्व आपकी बचत को सार्थक बनाना और बचत को अपने वित्तीय लक्ष्यों तक पहुँचने की दिशा में लगाना है। यह जानना मददगार होता है कि आप अपनी बचत का क्या करना चाहते हैं, और अगर आपके लक्ष्य स्पष्ट रूप से निर्धारित हों तो यह कारगर हो सकता है। इसलिए, 2026 में विदेश में पारिवारिक अवकाश की सूची बनाने के बजाय, इसके साथ एक लागत जोड़ना बेहतर होगा – 2026 में यूरोपीय अवकाश के लिए 4 लाख रुपये।

ऐसे कई ऑनलाइन टूल उपलब्ध हैं जो आपको अपने वित्तीय लक्ष्य तक पहुँचने के लिए हर महीने आवश्यक बचत की गणना करने में मदद कर सकते हैं, जो बचत से मिलने वाले अपेक्षित रिटर्न पर आधारित है। नियमित रूप से बचत और समय के साथ अनुशासित तरीके से इस राशि का निवेश करने से आपको अपने लक्ष्य तक पहुँचने में मदद मिल सकती है। आप म्यूचुअल फंड में निवेश कर सकते हैं, जहाँ आपको विभिन्न परिसंपत्ति वर्गों में निवेश के व्यापक विकल्प मिलेंगे, जो आपके जोखिम प्रोफ़ाइल और निवेश की समय-सीमा को पूरा करते हैं। ऐसे फंड उपलब्ध हैं जो अल्पकालिक, मध्यम और दीर्घकालिक वित्तीय लक्ष्यों के लिए उपयुक्त हैं और जिनमें अलग-अलग जोखिम स्तर होते हैं।

इसके अलावा, आप म्यूचुअल फंड में निवेश करने के लिए इसकी सुविधा और संरचना के लिए एक व्यवस्थित निवेश योजना या SIP का उपयोग कर सकते हैं। चूँकि अधिकांश लोगों को मासिक आय प्राप्त होती है, इसलिए वे म्यूचुअल फंड में निवेश करने के लिए SIP का रास्ता चुनकर अपने वित्तीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए मासिक निवेश चक्र का उपयोग कर सकते हैं। इससे आपके बचत अनुशासन में सुधार होता है - आप न केवल नियमित रूप से बचत करते हैं, बल्कि नियमित रूप से निवेश भी करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप 20 साल बाद 1 करोड़ रुपये का रिटायरमेंट फंड बनाना चाहते हैं; तो इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए आपको हर महीने 10,010 रुपये का निवेश करके 12% वार्षिक रिटर्न प्राप्त करना होगा।

पैसे की बचत वित्तीय सुरक्षा हासिल करने की पहली सीढ़ी है। अपने वित्त पर नियंत्रण रखने के लिए, अपनी वर्तमान और भविष्य की वित्तीय स्थिति को सुरक्षित करने के लिए, एक स्मार्ट बचत की आदत डालें। अनियोजित खर्चों के प्रलोभन को कम करने के लिए अपनी बचत और निवेश को स्वचालित करने की आदत डालें। आप पाएंगे कि आपकी बचत आपके लिए तभी कारगर साबित होगी जब आप सही निवेश विकल्पों का चयन करेंगे जिससे आपको अपने सभी वित्तीय लक्ष्यों को समय पर पूरा करने में मदद मिलेगी।

डॉ० गोरख नाथ
असिस्टेंट प्रोफेसर
अर्थशास्त्र विभाग

सूचना का अधिकार

(5 मिनट का पठन)

आरटीआई अधिनियम

संबंधित चुनौतियाँ तथा समाधान

सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 (आरटीआई अधिनियम) का मूल उद्देश्य नागरिकों को सार्वजनिक प्राधिकरणों से सूचना प्राप्त करने हेतु सशक्त बनाना है। इस प्रकार, यह सरकार के कामकाज में पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देता है और भारतीय लोकतंत्र को वास्तविक अर्थों में जनता के लिए कार्य करने योग्य बनाता है। परन्तु सूचना तक जनता की पहुँच के महत्व को देखते हुए, आरटीआई अधिनियम के कामकाज में बाधा डालने वाले अंतर्निहित मुद्दों का समाधान करना आवश्यक है।

आरटीआई अधिनियम का इतिहास

- सूचना का अधिकार कानून सर्वप्रथम 1766 में स्वीडन द्वारा लागू किया गया था।
- भारत में आरटीआई अधिनियम का विचार 1990 में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री वी.पी. सिंह द्वारा प्रस्तुत किया गया था।
- आरटीआई लागू करने के लिए पहला जमीनी स्तर का अभियान मजदूर किसान शक्ति संगठन (एमकेएसएस) द्वारा 1994 में शुरू किया गया था।
- राष्ट्रीय जन आरटीआई अभियान 1996 में गठित; सरकार के लिए आरटीआई कानून का प्रारंभिक मसौदा तैयार किया।
- तमिलनाडु 1997 में आरटीआई कानून पारित करने वाला पहला भारतीय राज्य बना।
- संसद द्वारा पारित सूचना की स्वतंत्रता (एफओआई) अधिनियम, 2002 को क्रियान्वित नहीं किया जा सका।
- वर्तमान आरटीआई अधिनियम, 2005 के लिए विधेयक राष्ट्रीय सलाहकार परिषद (एनएसी) की सिफारिशों पर मई 2005 में पारित किया गया था, और आरटीआई अधिनियम, 2005 12 अक्टूबर, 2005 से प्रभावी हो गया।

संबंधित चुनौतियाँ

आरटीआई अधिनियम का दुरुपयोग: आरटीआई मामले में सुने जाने के अधिकार के नियम के लागू न होने तथा सूचना मांगने के लिए कारण बताने की आवश्यकता न होने के कारण, यह देखा गया है कि कई याचिकाकर्ताओं द्वारा आरटीआई अधिनियम का दुरुपयोग किया जाता है।

- इससे गैर-गंभीर सूचना चाहने वालों के लिए प्रकटीकरण में सार्वजनिक हित के बजाय अपने व्यक्तिगत हित के लिए इसका दुरुपयोग करने की पर्याप्त गुंजाइश बन जाती है।
- इसके अलावा. इससे लोक सेवकों का समय भी बर्बाद होता है और उनके काम पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

कम जन जागरूकता: भारत में जन जागरूकता अपने अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों के बारे में भी बहुत कम है। इसके पीछे कुछ कारण शिक्षा और जागरूकता का अभाव हैं। यह भी देखा गया कि ग्रामीण क्षेत्रों और महिलाओं, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग जैसे वंचित समुदायों में जागरूकता का स्तर कम है।

मामलों के निपटान में भारी देरी और लंबित मामले: आरटीआई अधिनियम को क्रांतिकारी इसलिए माना गया क्योंकि इसमें एक निश्चित समय सीमा के भीतर जवाब देना होता था, अन्यथा संबंधित सरकारी अधिकारी को दंडित किया जाता था। हालाँकि, इस अधिनियम की समयबद्ध प्रकृति कई कारणों से प्रभावित होती है।

- केन्द्र स्तर पर सूचना आयुक्तों की अपर्याप्त संख्या के कारण मामलों की सुनवाई में देरी होती है।
- खराब गुणवत्ता, अपूर्ण और गलत जानकारी के कारण आरटीआई अधिनियम के तहत प्रथम अपील दायर करने की संख्या में काफी वृद्धि हो जाती है।
- अधिनियम में मुख्य सूचना आयोग (सीआईसी) में द्वितीय अपील की सुनवाई की कोई सीमा

- निर्धारित नहीं है। इसके कारण, आवेदक को सीआईसी में अपने मामले की सुनवाई के लिए महीनों इंतज़ार करना पड़ता है।
- क्षेत्रीय कार्यालयों से सूचना एकत्र करने के लिए अप्रभावी रिकॉर्ड प्रबंधन प्रणाली और प्रक्रियाएं आरटीआई आवेदनों के प्रसंस्करण में देरी का कारण बनती हैं।

कानून का कमजोर होना: आरटीआई अधिनियम (संशोधन) अधिनियम, 2019 केंद्र सरकार को केंद्रीय और राज्य दोनों स्तरों पर सूचना आयुक्तों की नियुक्ति और सेवा शर्तें तय करने की शक्ति देता है। केंद्र सरकार को अत्यधिक शक्तियां प्रदान करके, इस संशोधन ने सीआईसी की स्वायत्तता में बाधा उत्पन्न की है।

प्रवर्तनीयता का मुद्दा: अधिनियम सूचना आयोगों को अपने निर्णयों को लागू करने के लिए पर्याप्त अधिकार नहीं देता है। सूचना आयोग सार्वजनिक प्राधिकारियों को अधिनियम के अनुपालन के लिए आवश्यक कदम उठाने के निर्देश दे सकते हैं, लेकिन यदि ऐसे निर्देशों की अनदेखी की जाती है तो उन्हें कोई कार्रवाई करने का अधिकार नहीं है।

गोपनीयता: भारत में सूचना का मुक्त प्रवाह विधायी ढांचे द्वारा गंभीर रूप से प्रतिबंधित है, जिसमें सरकारी गोपनीयता अधिनियम, 1923 जैसे कई प्रतिबंधात्मक कानून शामिल हैं।

समाधान

खुली डेटा नीति: सरकारी संस्थाओं को सभी प्रकटीकरण योग्य जानकारी अपनी-अपनी वेबसाइटों पर डालनी चाहिए। इससे याचिकाकर्ताओं को जो भी जानकारी चाहिए वह उन्हें तुरंत मिल सकेगी। विभाग पर सूचना उपलब्ध कराने का बोझ भी कम हो जाएगा, जिसमें उसका बहुमूल्य समय खर्च होता है।

समान आरटीआई आवेदनों का संकलन: कई आरटीआई आवेदक एक ही विषय पर कई आरटीआई आवेदन दायर करते हैं। एक ही जानकारी मांगते हैं, जिससे विभिन्न सार्वजनिक संस्थानों के सूचना विभागों पर बोझ बढ़ जाता है। इसके अलावा, ऐसे डुप्लिकेट मामलों को समाप्त करने के लिए एक प्रणाली स्थापित करने की आवश्यकता है।

आरटीआई के दुरुपयोग को रोकना: याचिका दायर करने के लिए कारण जानने का प्रावधान शुरू करके आरटीआई के दुरुपयोग को रोका जा सकता है। इसके अलावा, अनावश्यक सूचना मांगने या जनहित में न होने पर सूचना आयुक्त का बहुमूल्य समय बर्बाद करने पर दंड का प्रावधान होना चाहिए।

निजता के अधिकार के साथ संतुलन: संविधान द्वारा संरक्षित नागरिक का एक और अधिकार निजता का अधिकार है। यह अधिकार संविधान के अनुच्छेद 21 की भावना में निहित है। इस प्रकार, सूचना के अधिकार को कानून के ढांचे के भीतर गोपनीयता के अधिकार के साथ संतुलित किया जाना चाहिए।

जन जागरूकता बढ़ाना: यह ग्रामीण क्षेत्रों में रेडियो, टेलीविजन और प्रिंट मीडिया (विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं) के माध्यम से जागरूकता अभियान चलाकर किया जा सकता है। स्कूल/कॉलेज के पाठ्यक्रम में आरटीआई अधिनियम, 2005 पर एक अध्याय जोड़ा जाना चाहिए। केंद्रीय/राज्य सूचना आयोगों को आरटीआई अधिनियम, 2005 के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए पर्याप्त धनराशि उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

लोकतंत्र का अर्थ है जनता का, जनता द्वारा और जनता के लिए शासन। तीसरे प्रतिमान को प्राप्त करने के लिए, राज्य को जागरूक जनता के महत्व और एक राष्ट्र के रूप में देश के विकास में उसकी भूमिका को स्वीकार करना शुरू करना होगा। इस संदर्भ में, सूचना का अधिकार अधिनियम से जुड़े अंतर्निहित मुद्दों का समाधान किया जाना चाहिए, ताकि यह **सूचना समाजों की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके।**

डॉ० खीला कोरंगा
असिस्टेंट प्रोफेसर
इतिहास विभाग

लाल बहादुर शास्त्री

सादगी और दृढ़ता के प्रतीक

(2 मिनट का पठन)

*"भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री **लाल बहादुर शास्त्री** जी भारतीय इतिहास के सबसे आदरणीय नेताओं में से एक हैं। उनकी सादगी, ईमानदारी और देश के प्रति निष्ठा ने उन्हें जनता के दिलों में अमर बना दिया। शास्त्री जी का जीवन इस बात का प्रमाण है कि सच्चा नेतृत्व विनम्रता, नैतिकता और कर्तव्यनिष्ठा से जन्म लेता है।"*

2 अक्टूबर 1904 को उत्तर प्रदेश के मुगलसराय (अब पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर) में जन्मे लाल बहादुर शास्त्री का परिवार आर्थिक रूप से साधारण था। उनके पिता एक शिक्षक थे और माता धार्मिक एवं संस्कारवान महिला थीं। कठिन परिस्थितियों के बावजूद शास्त्री जी ने अपनी शिक्षा पूरी की और प्रारंभ से ही मेहनत, अनुशासन और ईमानदारी को अपने जीवन का आधार बनाया।

कम उम्र में ही वे **महात्मा गांधी** के विचारों से अत्यधिक प्रभावित हुए और स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ गए। उन्होंने **असहयोग आंदोलन (1921)** में भाग लिया और कई बार ब्रिटिश सरकार द्वारा जेल भेजे गए। आज़ादी की लड़ाई में उनका समर्पण और निष्ठा देखकर राष्ट्रीय नेताओं ने उन्हें उच्च सम्मान दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उन्होंने विभिन्न प्रशासनिक पदों पर कार्य किया, जहाँ उनकी कार्यकुशलता और सादगी लोगों के लिए प्रेरणा बन गई।

1964 में प्रधानमंत्री बनने के बाद, शास्त्री जी को दो बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ा — खाद्यान्न संकट और राष्ट्रीय सुरक्षा। उन्होंने किसानों को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया और **हरित क्रांति** की नींव रखी। उनका प्रसिद्ध नारा **"जय जवान, जय किसान"** आज भी देशभक्ति और परिश्रम का प्रतीक माना जाता है।

1965 के भारत-पाक युद्ध के समय शास्त्री जी ने अद्भुत साहस और संतुलन दिखाया। उनके नेतृत्व में देश एकजुट होकर डटा रहा। युद्ध के बाद उन्होंने पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब ख़ान से **ताशकंद समझौते** पर हस्ताक्षर किए, जो शांति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। दुर्भाग्यवश, **11 जनवरी 1966** को ताशकंद में ही उनकी रहस्यमय परिस्थितियों में मृत्यु हो गई। यह देश के लिए अपूरणीय क्षति थी।

लाल बहादुर शास्त्री जी का जीवन हमें सिखाता है कि सच्चा नेतृत्व दिखावे या पद से नहीं, बल्कि ईमानदारी और सेवा भावना से आता है। उन्होंने सादगी को अपनी शक्ति बनाया और हमेशा राष्ट्रहित को व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर रखा। आज भी उनकी विचारधारा भारतवासियों को आत्मनिर्भरता, एकता और कर्तव्यनिष्ठा का मार्ग दिखाती है। अंततः, लाल बहादुर शास्त्री जी केवल एक राजनीतिक नेता नहीं, बल्कि नैतिकता और समर्पण के प्रतीक थे। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि महानता का रास्ता सादगी और सत्य के मार्ग से होकर जाता है। उनके आदर्श सदैव भारत को प्रेरित करते रहेंगे।

डॉ० अंजू निगम
असिस्टेंट प्रोफेसर
भौतिक विज्ञान विभाग

भैलो

गढ़वाल की दीपावली की ज्वलंत परम्परा

भूमिका-भारत जैसे विविधता भरे देश में हर प्रदेश की अपनी अनोखी लोक परंपराएँ हैं, कहीं पर्वों में गीत गाए जाते हैं, कहीं नृत्य किए जाते हैं, तो कहीं खेलों के रूप में उत्सव मनाए जाते हैं। इन्हीं परंपराओं के बीच उत्तराखंड के गढ़वाल क्षेत्र की पहचान केवल हिमालय की गोद में बसे सुंदर पहाड़ों से नहीं है, बल्कि यहाँ के लोग प्रकृति, पर्वतों और देवताओं के साथ गहराई से जुड़े हैं, और उनकी हर परंपरा में इस जुड़ाव की झलक साफ़ दिखाई देती है। इन्हीं परंपराओं में से एक है "भेलो" या "भैलो", जो दीवाली के बाद इगास बग्वाल की रात को मनाया जाता है। यह पर्व गढ़वाली समाज की एकता, आनंद और सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक है। भेलो पर्व आज भी गांवों में पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है और यह लोगों को अपनी जड़ों, परंपराओं और प्रकृति से जोड़े रखता है।भेलो पर्व गढ़वाल में कार्तिक शुक्ल एकादशी को मनाया जाता है, जो दीपावली के लगभग ग्यारह दिन बाद पड़ती है। इस दिन को गढ़वाल में "इगास बग्वाल" या "बूढ़ी दीवाली" के नाम से जाना जाता है। माना जाता है कि यह पर्व दीवाली का समापन उत्सव है, जिसमें पूरे गांव के लोग एक साथ आकर दीपोत्सव को सामूहिक रूप से मनाते हैं। इस दिन गांवों में लोग ढोल दमाऊ की थाप पर लोकगीत गाते हैं, नाचते हैं और रात भर भेलो जलाते हैं। यह न केवल उत्सव का प्रतीक है, बल्कि यह गढ़वाली समाज की सामुदायिक एकता और लोक जीवन की जड़ों का प्रतीक भी है। भेलो कोई साधारण खेल नहीं, बल्कि यह एक सांस्कृतिक उत्सव है जो गढ़वाल के लोगों के साहस, एकता और आनन्द का प्रतीक बन गया है। दीपावली की रात जब चारों ओर अंधकार और शांति होती है, तब गाँवों के युवक अग्नि की मशालें लेकर मैदानों में उतरते हैं, और फिर शुरू होता है "भेलो" का दृश्य लपटों का नृत्य, हँसी की गूंज, गीतों की लय और लोगों का उल्लास; मानो पूरी धरती दीपों की रोशनी में नहीं, मानव हृदय के उत्साह में जगमगा उठी हो। भेलो खेलना सिर्फ़ मनोरंजन नहीं, बल्कि अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीकात्मक उत्सव है। गढ़वाल के लोग मानते हैं कि भेलो की अग्नि में साहस, ऊर्जा और शुभता बसती है। यह वही अग्नि है जो बुराइयों, नकारात्मकता और अंधकार को मिटाकर आशा और उजाले की राह दिखाती है। यह खेल गाँवों के सामाजिक जीवन का भी अभिन्न हिस्सा है क्योंकि इसमें सब लोग, बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक, एक साथ भाग लेते हैं। जब युवक भेलो घुमाते हैं, तब बच्चे ताली बजाते हैं और महिलाएँ गीत गाती हैं। उस क्षण कोई अमीर-गरीब, जाति या भेद नहीं रह जाता सब केवल गढ़वाली लोक संस्कृति की एक लौ बन जाते हैं। भेलो की सबसे खास बात यह है कि यह परंपरा आज भी गाँवों में उतनी ही श्रद्धा और उत्साह से निभाई जाती है, जितनी सैकड़ों साल पहले निभाई जाती थी।

भेलो पर्व की लोककथाएँ और उत्पत्ति:

भेलो की उत्पत्ति को लेकर गढ़वाल में कई लोककथाएँ प्रचलित हैं:

- **रामायण से जुड़ी कथा:** कहा जाता है कि जब भगवान राम चौदह वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या लौटे और वहां दीपावली मनाई गई, तो उस समय यह समाचार गढ़वाल की पर्वतीय बस्तियों तक पहुंचने में ग्यारह दिन लग गए। जब यह खुशखबरी पहाड़ों तक पहुँची, तब वहाँ के लोगों ने दीप जलाकर अपनी दीवाली ग्यारह दिन बाद मनाई, जो आगे चलकर "इगास बग्वाल" और "भेलो" के रूप में प्रसिद्ध हुई।
- **वीर माधो सिंह भंडारी की कथा:** एक अन्य कथा के अनुसार, गढ़वाल के प्रसिद्ध योद्धा माधो सिंह भंडारी जब तिब्बत से विजय प्राप्त कर लौटे, तो उनके स्वागत में पूरे क्षेत्र ने दीप जलाए और उत्सव मनाया। उसी अवसर को बाद में "भेलो" पर्व के रूप में मनाया जाने लगा।इन दोनों कथाओं से यह स्पष्ट होता है कि भेलो केवल धार्मिक या ऐतिहासिक घटना नहीं है, बल्कि यह गढ़वाली अस्मिता और गौरव का प्रतीक भी है।

भेलो की तैयारी:

भेलो तैयार करने के लिए सबसे पहले युवक जंगलों की ओर निकलते हैं। वे वहाँ से चीड़ के पेड़ों की सूखी लकड़ियाँ, रिंगल (बाँस की पतली डंडियाँ), और रस्सियाँ (आमतौर पर बाँस या पौधे की जड़ से बनी) लेकर आते हैं। भेलो का मुख्य भाग होता है चीड़ की छाल (राल से भरी हुई लकड़ी) क्योंकि उसमें आग लंबे समय तक जलती है और उसकी लपटें ऊँची उठती हैं। गाँव के आँगन या चौपाल में सब लोग मिलकर भेलो बनाते हैं। लकड़ियों को गोल-गोल लपेटकर एक मशाल जैसी आकृति दी जाती है, जिसके सिरों को रस्सियों से कसकर बाँध दिया जाता है ताकि जलने पर वह बिखरे नहीं। बच्चे और बूढ़े भी इस तैयारी में उत्साह से भाग लेते हैं।

भेलो की रात का दृश्य:

दीपावली की रात जब पूरा गाँव दीपों से जगमगा उठता है, तब असली उत्सव शुरू होता है। आकाश में तारे झिलमिला रहे होते हैं, पहाड़ों की चोटियाँ चाँदनी में चमक रही होती हैं, और दूर कहीं ढोल दमाऊ की आवाज़ सुनाई देती है। ऐसे माहौल में युवक अपने-अपने भेलो लेकर मैदान या ढलान पर पहुँचते हैं। जैसे ही पहला भेलो आग से जलाया जाता है, उसकी लपटें हवा में घूमती हैं आग की एक गोल लकीर आकाश में घूमती हुई सी लगती है, मानो किसी ने अग्नि के फूलों की माला बना दी हो। लोग "भेलो भेलो! जय देवता की जय!" के नारे लगाते हैं, बच्चे खुशी से दौड़ते हैं, और महिलाएँ तालियाँ बजाकर गीत गाती हैं। कुछ युवक टोली बनाकर खेल को प्रतिस्पर्धा के रूप में खेलते हैं कौन सबसे सुंदर भेलो जलाएगा, कौन उसे सबसे देर तक घुमाएगा, या किसके भेलो की लपटें सबसे ऊँची जाएँगी। कई बार दो टीमें आमने-सामने भेलो घुमाती हैं और बीच का आसमान अग्नि के नृत्य से भर जाता है। भेलो की रोशनी पूरे गाँव को एक साथ जोड़ देती है। यह दृश्य इतना मोहक होता है कि लगता है जैसे धरती और आकाश दोनों एक साथ दीपावली मना रहे हों। भेलो की लपटों में बच्चों की हँसी, ढोल की थाप और लोकगीतों की गूंज मिलकर एक ऐसा वातावरण बनाती है जो गढ़वाल की आत्मा को जीवंत कर देता है।

निष्कर्ष:

गढ़वाल की भेलो परंपरा एक गहरी सांस्कृतिक विरासत है, जो सामुदायिक एकता, प्राकृतिक संवेदनशीलता और अपनी मूल जड़ों के प्रति लगाव को प्रदर्शित करती है। दीवाली के बाद इगास बग्वाल की रात इस पर्व को मनाने की परंपरा सदियों से गढ़वाल के गांवों में चली आ रही है। यह पर्व लोगों को एक साथ लाता है और पुरखों की कहानियों, लोकगीतों व नृत्यों के माध्यम से अपनी पहचान और संस्कृति को सशक्त बनाता है। भेलो के अनुष्ठान में गांव के युवा, महिलाएँ और बुजुर्ग सभी मिलकर गीत गाते हैं, नृत्य करते हैं और जलती हुई भैलो (रस्सी) को घुमाने की रस्म निभाते हैं। यह परंपरा एकता, भाईचारे और सामूहिक आनंद का प्रतीक है, जो हर व्यक्ति को अपने समुदाय से जोड़ती है।

डॉ० महेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
रसायन विज्ञान विभाग

अहिंसा दीप

एक दीप जला, छोटा सा,
गांधी जी का प्यारा।
प्रेम की बाती, सत्य का तेल,
दूर करे अंधियारा।

नहीं हाथ में तलवार थी,
ना था कोई बाण।
अहिंसा से ही जीत लिया,
सारा हिन्दुस्तान।

हर मन में हो शांति ऐसी,
जैसे बहती गंगा।
गांधी जी का यही संदेश,
सत्य और अहिंसा।

छोटा बच्चा, बूढ़ा जन,
सबको ये सिखलाए।
प्यार से बदले बैर को,
यही धर्म कहलाए।

द्वारा रचित: डॉ० शैफाली सक्सेना

भारत का लाल

गंगा की गोद में, एक तारा खिला था,
मुगलसराय में, बचपन मिला था।
लालबहादुर नाम, कर्मठ छवि थी,
सादा जीवन, ऊँची सोच सभी थी।

गरीबी में पला, संघर्षों से खेला,
नदी तैरकर, स्कूल अकेला।
अंग्रेजों से टक्कर, भारत को जगाया,
आजादी का सपना, आँखों में छाया।

स्वतंत्र भारत में, रेल मंत्री बने,
दुर्घटनाएँ देखीं, मन में घने।
जिम्मेदारी ली, पद से हटे,
नैतिकता का पाठ, सबको पढ़ाए।

फिर आए प्रधानमंत्री, देश की कमान,
"जय जवान, जय किसान" उनका नारा महान।
अन्न की कमी थी, युद्ध का भी साया,
पर शास्त्री जी ने, साहस दिखाया।

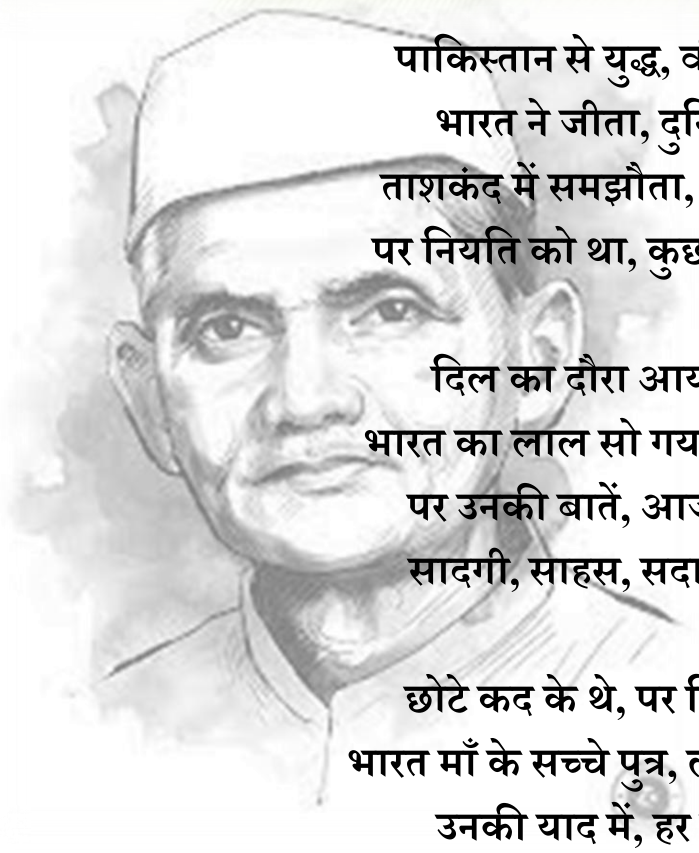

पाकिस्तान से युद्ध, वीरता की गाथा,
भारत ने जीता, दुनिया ने माना।
ताशकंद में समझौता, शांति का संदेश,
पर नियति को था, कुछ और ही आदेश।

दिल का दौरा आया, दूर देश में,
भारत का लाल सो गया, हमेशा के लिए।
पर उनकी बातें, आज भी गूँजती हैं,
सादगी, साहस, सदा प्रेरणा देती हैं।

छोटे कद के थे, पर विचार विशाल,
भारत माँ के सच्चे पुत्र, लाल बहादुर लाल।
उनकी याद में, हर दिल रोता है,
देशभक्ति का दीप, सदा जलता है।

द्वारा रचित: डॉ० शैफाली सक्सेना

GANDHI IN ENVIRONMENTAL THOUGHT

Harmony with Nature

(15 minutes to read)

In an era where climate change headlines dominate global discourse, and the planet grapples with unprecedented environmental degradation, it's fascinating to turn back the clock to the early 20th century and find a figure whose ideas resonate profoundly with today's ecological challenges. Mahatma Gandhi, the iconic leader of India's independence movement, is often celebrated for his principles of non-violence and civil disobedience. Yet, beneath the surface of his political activism lies a rich layer of environmental thought that emphasizes living in harmony with nature. Though Gandhi never identified as an "environmentalist" in the modern sense, the term itself gained prominence decades after his death, his philosophy offers a blueprint for sustainable living that feels strikingly prescient.

Gandhi's environmental chintan, or contemplation, was not born in isolation. It stemmed from a deep spiritual and ethical worldview influenced by Indian traditions like Hinduism, Jainism, and Buddhism, as well as Western thinkers such as Henry David Thoreau and John Ruskin. At its core, his vision was about samanjasyata (harmony) with nature, viewing humans not as conquerors of the earth but as integral parts of a larger, interconnected web of life. This article explores Gandhi's environmental philosophy, its key principles, critiques of modernity, practical applications, and enduring relevance. Through his writings, actions, and the movements he inspired, we uncover how Gandhi's ideas can guide us toward a greener, more equitable future.

Gandhi's famous quote, "The Earth provides enough to satisfy every man's need, but not every man's greed," encapsulates this ethos. It wasn't just rhetoric; it was a call to action against the exploitative tendencies of industrialization and consumerism that he foresaw would lead to ecological ruin. As we face issues like deforestation, pollution, and biodiversity loss, Gandhi's thoughts remind us that true progress isn't measured by economic growth alone but by our ability to coexist peacefully with the natural world.

Historical Context and Influences

To understand Gandhi's environmental perspective, we must first situate it within the historical and cultural milieu of his time. Born in 1869 in Porbandar, India, under British colonial rule, Gandhi witnessed firsthand the ravages of imperialism, not just on people but on the land. Colonial policies exploited India's resources, leading to widespread deforestation for timber exports, soil degradation from cash-crop monocultures, and disruption of traditional agrarian lifestyles. This exploitation fueled Gandhi's critique of Western civilization, which he saw as a force that alienated humans from nature.

Gandhi's influences were eclectic. From Jainism, he inherited the principle of ahimsa (non-violence), which extends compassion to all living beings, including animals, plants, and even microorganisms. Hinduism's concept of the unity of all life, where the divine permeates every aspect of creation, reinforced his view of nature as sacred. He was also inspired by the *Bhagavad Gita*, which teaches detachment from material possessions, a theme central to his environmentalism. Western influences included Ruskin's *Unto This Last*, which Gandhi translated into Gujarati as *Sarvodaya* (welfare of all), and Thoreau's Walden, which advocated simple living in harmony with nature.mkgandhi.org

In South Africa, where Gandhi spent over two decades, he established communities like Phoenix Settlement and Tolstoy Farm, experimenting with self-sufficient living. These ashrams were microcosms of his environmental vision: communal farming, minimal waste, and a rejection of mechanized luxury. Back in India, during the freedom struggle, Gandhi linked environmental concerns to swaraj (self-rule), arguing that true independence required economic and ecological autonomy from colonial exploitation. His writings, such as *Hind Swaraj* (1909), lambast modern civilization for its destructive path. Gandhi wrote, "This civilization is such that one has only to be patient and it will be self-destroyed." He predicted that unchecked industrialization would lead to resource scarcity and environmental collapse, insights that align eerily with today's realities.

Key Principles of Gandhi's Environmental Philosophy

Gandhi's environmental thought is woven through several interlocking principles, each promoting harmony with nature. These aren't abstract ideals but practical guidelines for daily life.

➢ Ahimsa: Non-Violence Toward All Life

At the heart of Gandhi's philosophy is ahimsa, or non-violence, which he extended beyond human interactions to encompass the natural world. For Gandhi, violence against nature, through deforestation, pollution, or animal exploitation, was akin to violence against oneself, given the interconnectedness of all life. He practiced vegetarianism not just for health but as an ethical stance, believing that killing animals for food disrupted ecological balance and perpetuated a cycle of violence.

In environmental terms, ahimsa implies conservation and mindful consumption. Gandhi warned against wars and conflicts, noting their massive carbon footprints and destruction of habitats. He quipped in response to a comment on declining wildlife: "Wildlife is decreasing in the jungles, but increasing in the towns." This highlights how urbanization displaces species, a problem we see today with habitat fragmentation.

Ahimsa also informs Gandhi's approach to agriculture. He advocated organic farming methods that avoid chemical pesticides, which harm soil microbes and pollinators. In his ashrams, composting and crop rotation were standard, fostering soil health and biodiversity.

➢ Aparigraha: Non-Possession and Minimalism

Aparigraha, the principle of non-possession or non-attachment, urges limiting one's desires and possessions to essentials. Gandhi lived this by owning few items, a spinning wheel, spectacles, and simple clothing, demonstrating that excess leads to exploitation. In an environmental context, this combats consumerism, which drives overproduction, waste, and resource depletion.

Gandhi believed that greed, not scarcity, causes poverty and ecological harm. By practicing aparigraha, individuals reduce their ecological footprint, conserving water, energy, and materials. This principle aligns with modern concepts like the circular economy, where reuse and recycling minimize waste.

He argued that true wealth lies in ethical living, not material accumulation. "To forget how to dig the earth and to tend the soil is to forget ourselves," he said, emphasizing hands-on connection with nature.

➢ Swadeshi and Swaraj: Self-Reliance and Localism

Swadeshi (use of indigenous goods) and swaraj (self-rule) promote economic independence through local production, reducing the environmental costs of global trade. Gandhi championed khadi (handspun cloth) as a symbol of self-reliance, arguing that cottage industries minimize pollution and empower villages.

In *Hind Swaraj*, he critiqued mass production, favouring "production by the masses." This decentralized approach lowers transportation emissions and preserves local ecosystems. Swaraj extends to gram swaraj (village self-governance), where communities manage resources sustainably, using traditional knowledge for water harvesting and forestry.

Gandhi envisioned villages as self-sufficient units, with renewable energy from biogas and solar, long before these became mainstream. This model counters urban sprawl, which Gandhi called a "double drain" on rural areas.

➢ Sarvodaya: Welfare of All

Sarvodaya, or the upliftment of all, includes non-human life and future generations. Gandhi's vision of healthy development involves evolving environments that ensure harmonious existence. It aligns with sustainable development goals, emphasizing equity and ecological balance. This principle critiques development that benefits few at the expense of many, including nature. Gandhi promoted trusteeship, where resources are held in trust for the common good, preventing overexploitation.

➢ Trusteeship and Bread Labour

Trusteeship views individuals as stewards of wealth and nature, obligated to use resources ethically. Bread labour, the idea that everyone should perform physical work for sustenance, connects humans to the earth, fostering respect for manual labour and reducing reliance on machines that degrade environments.

Critiques of Industrialization and Modern Civilization

Gandhi's sharpest environmental insights come from his indictment of industrial civilization. In Hind Swaraj, he labelled it "satanic," predicting it would lead to unemployment, urbanization, and ecological destruction. He foresaw climate change-like issues, warning of air pollution's health impacts as early as 1906. Gandhi contrasted this with ancient civilizations' restraint, arguing that divorcing science from morality creates hierarchies between humans and nature. Modern development, with its focus on profit, leads to deforestation, water scarcity, and pollution, problems that Gandhi attributed to greed.

He advocated an "economy of permanence," where production is labor-intensive and local, preserving nature's interconnections. This critiques capitalism's endless growth, proposing instead a moral economy based on sufficiency.

Gandhi's Practices and Lifestyle

Gandhi didn't just theorize; he lived his principles. In ashrams like Sabarmati and Sevagram, residents practiced organic farming, composting, and water conservation, creating self-sustaining ecosystems. Daily walks connected him to nature, which he saw as a source of inspiration: "I need no inspiration other than Nature's."

His vegetarian diet reduced ecological impact, as plant-based foods require fewer resources. Khadi spinning symbolized resistance to industrial textiles, which exploit labor and land. These practices influenced health and hygiene campaigns, linking personal well-being to environmental cleanliness.

Influence on Environmental Movements

Gandhi's legacy lives in movements like Chipko, where villagers hugged trees to prevent logging, embodying satyagraha. The Narmada Bachao Andolan used non-violent protests against dams that displace communities and flood ecosystems.

Globally, thinkers like Arne Naess drew from Gandhi for deep ecology, emphasizing unity with nature. His ideas inspire eco-feminism and sustainable development initiatives.

Modern Relevance

Today, Gandhi's thoughts address pressing issues. His call for minimalism counters consumerism amid plastic pollution and waste crises. Swadeshi supports local economies in the face of globalization's carbon footprint.

For climate change, ahimsa promotes peaceful transitions to renewables, while sarvodaya ensures just transitions for vulnerable communities. Institutions like ICMR-NIREH apply Gandhian principles to study pollution's health impacts.

In policy, Gandhi inspires sustainable agriculture, renewable energy, and circular economies. His vision of gram swaraj could revitalize rural areas, combating urban migration and slum growth. Yet, challenges remain: adapting his village-centric model to urban realities and integrating technology without exploitation.

Gandhi's environmental chintan offers a timeless guide to harmony with nature. By embracing ahimsa, aparigraha, and sarvodaya, we can forge a path away from destruction toward sustainability. As the world confronts ecological tipping points, Gandhi's words ring true: live simply so others may simply live. His legacy isn't just historical—it's a call to action for a greener future.

References

- Gandhi, M. K. (1909). *Hind swaraj or Indian home rule*. Navajivan Publishing House. (Original work published 1909)
- Gandhi, M. K. (1958–1994). *The collected works of Mahatma Gandhi* (Vols. 1–100). Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, Government of India.
- Hardiman, D. (2003). *Gandhi in his time and ours: The global legacy of his ideas*. Columbia University Press.
- Jain, N. K. (2012). Gandhian environmentalism: A study in ecological ethics. *Gandhi Marg, 34*(3), 345–362.
- Khoshoo, T. N., & Moolakkattu, J. S. (Eds.). (2009). *Mahatma Gandhi and the environment: Analysing Gandhian environmental thought*. The Energy and Resources Institute (TERI).
- Naess, A. (1989). *Ecology, community and lifestyle: Outline of an ecosophy* (D. Rothenberg, Trans.). Cambridge University Press. (Original work published 1976)
- Parekh, B. (1997). *Gandhi: A very short introduction*. Oxford University Press.
- Pyarelal. (1956). *Mahatma Gandhi: The last phase* (Vol. 1). Navajivan Publishing House.
- Ruskin, J. (1862). *Unto this last: Four essays on the first principles of political economy*. Smith, Elder & Co.
- Shiva, V. (1992). The Chipko movement and Gandhian non-violence. In *Staying alive: Women, ecology and development* (pp. 67–85). Zed Books.
- Thoreau, H. D. (1854). *Walden; or, life in the woods*. Ticknor and Fields.
- Weber, T. (1999). Gandhi, deep ecology, peace research and Buddhist economics. *Journal of Peace Research, 36*(3), 349–361.

Dr. Kavinder Bhatt
Assistant Professor
Department of English

(3 minutes to read)

superconductivity

The Cool Science Behind Zero Resistance

Imagine a world where electricity flows without losing any energy. No heat, no resistance, and 100% efficiency. Sounds like science fiction, right? Well, it's not—it's called **superconductivity**, and it's one of the most fascinating phenomena in physics.

🌡️ What is Superconductivity?

Superconductivity is a state in which a material can conduct electricity with **zero electrical resistance**. This means that once an electric current starts flowing through a superconducting wire, it can keep going *forever* without any power source. No energy is lost as heat—unlike in regular wires, where resistance slows down the current and wastes energy.

But there's a catch: superconductivity only occurs under **very low temperatures**, often hundreds of degrees below zero. That's colder than outer space!

⚙️ How Was It Discovered?

The story of superconductivity began in 1911 when a Dutch physicist named **Heike Kamerlingh Onnes** was studying the electrical properties of mercury at extremely low temperatures. To his surprise, when he cooled the mercury to about **-269°C (4 Kelvin)**, its electrical resistance suddenly dropped to zero. He had just discovered superconductivity!

💡 Why Is It Important?

Superconductors have the potential to **revolutionize technology**. Here's how:

- ***Maglev Trains:*** Superconducting magnets are used to float and propel trains without touching the tracks. These trains are ultra-fast and super smooth.
- ***Medical Imaging:*** MRI machines use superconducting magnets to create detailed images of the body.
- ***Power Transmission:*** Superconductors could allow electricity to travel long distances without energy loss—making power grids more efficient.
- ***Quantum Computers:*** Some of the most advanced quantum computers use superconducting circuits to process information much faster than traditional computers.

❄️ High-Temperature Superconductors: A Game Changer?

For decades, scientists thought superconductivity was only possible at ultra-low temperatures. But in 1986, researchers discovered materials that could superconduct at *higher* temperatures (though still very cold). These are called **high-temperature superconductors** and they work at around **-135°C (138 Kelvin)**.

More recently, there have been claims of room-temperature superconductivity under extreme pressure—but these findings are still being tested and verified.

🔍 Challenges Ahead

While superconductivity holds great promise, there are still hurdles to overcome:

- ***Cooling costs:*** Keeping materials cold enough to become superconducting is expensive.
- ***Material limitations:*** Not all materials can become superconductors.
- ***Fragility:*** Superconducting materials can be brittle and hard to work with.

🧠 Supercool Science, Super Bright Future

Superconductivity may sound like a complex concept buried in physics labs, but its real-world applications are growing fast. From transforming transportation to powering the next generation of computers, this phenomenon is at the heart of some of the most exciting technological breakthroughs.

As research continues, who knows? One day, superconductivity might power your city—or even your laptop!

Stay curious, stay cool—just like a superconductor!

❄️ Some Supercool Facts About Superconductivity

- ***Powering the World's Largest Physics Machine:*** The Large Hadron Collider, the massive particle-smashing machine in Europe, uses thousands of superconducting magnets to guide particles at nearly light speed.
- ***Trapping Magnetic Fields Like a Cage:*** Some types of superconductors can capture and hold magnetic field lines inside them. This unique ability makes them super useful for creating strong and steady magnetic fields.
- ***Room Temperature Superconductors? Almost There!:*** Scientists have found materials that seem to become superconductors at room temperature—but only when squeezed under incredible pressure. We're still far from everyday use, but the progress is exciting!
- ***Quantum Quirks Behind the Scenes:*** Superconductivity doesn't follow ordinary electrical rules. Instead, it's a result of quantum behavior, where electrons move in pairs in perfect sync, slipping through materials without resistance.
- ***A Green Future with No Energy Loss:*** If we could use superconductors without needing to cool them so much, we could carry electricity across cities without wasting energy. That would mean lower bills and a cleaner planet!

Dr. Anju Nigam
Assistant Professor
Department of Physics

Source: sci-hub, google.com

(15 minutes to read)

MANGROVES OF INDIA
The Natural Guardians of Our Coasts

India is home to some of the world's most significant mangrove ecosystems, with a total cover of approximately 4,991.68 square kilometres, as per the India State of Forest Report (ISFR) 2023. These coastal forests are crucial for protecting shorelines, supporting biodiversity, and providing livelihoods for local communities.

Distribution of Mangroves in India: Mangrove forests are found along the country's coastlines in nine states and four union territories. The highest concentration is on the eastern coast in the Bay of Bengal, followed by the western coast along the Arabian Sea and the Andaman and Nicobar Islands.

- **West Bengal:** With 42.45% of India's total mangrove cover, the state is home to the world's largest contiguous mangrove forest, the Sundarbans. A UNESCO World Heritage Site, it is a critical habitat for the Royal Bengal tiger and numerous other species.
- **Gujarat:** Accounting for 23.32% of the country's mangroves, Gujarat has seen significant increases in its cover due to successful afforestation projects. The mangroves here are mostly of the scrubby, stunted variety and are found in the Gulf of Kutch and the Kori Creek.
- **Andaman and Nicobar Islands:** These islands contain a dense, diverse, and relatively undisturbed mangrove ecosystem that is important for the overall island ecology.
- **Andhra Pradesh:** The estuaries of the Godavari and Krishna rivers host significant mangrove forests. The Godavari mangroves at the Coringa Wildlife Sanctuary are the second-largest in India.
- **Odisha:** The state's largest mangroves are in the Mahanadi delta region, particularly within Bhitarkanika National Park. It is the country's second-largest mangrove ecosystem and a Ramsar wetland site.
- **Maharashtra:** Patches of mangroves are found in the intertidal regions of estuaries and creeks along the coast.
- **Tamil Nadu:** The Pichavaram Mangrove Forest, near the town of Chidambaram, features a network of channels and islands.
- **Goa:** Mangroves are present along the Mandovi and Zuari estuaries.

Key Characteristics: Indian mangroves have unique adaptations that allow them to thrive in harsh coastal conditions.

- **Salt Tolerance:** Known as halophytes, these trees have evolved complex root filtration systems and salt-secreting glands on their leaves to manage high salinity.
- **Pneumatophores:** Many species possess specialized roots that grow vertically out of the anoxic mud to absorb oxygen from the atmosphere.
- **Viviparity:** The seeds of many mangrove species germinate while still attached to the parent tree. The seedlings, or propagules, then drop and float away to take root in a new spot.
- **Complex Root Systems:** Arching prop roots and stilt roots provide structural support and help slow water flow, which enhances sediment deposition.

Importance and Conservation: Mangroves provide vital ecological services and economic benefits.

- **Coastal Protection:** Their dense root systems act as natural buffers, protecting coastlines from soil erosion and the impact of cyclones, tsunamis, and storm surges.
- **Biodiversity Hotspot:** They serve as breeding and nursery grounds for a wide variety of fish, shellfish, birds, and other wildlife.
- **Carbon Sequestration:** Mangroves are highly effective "blue carbon" sinks, storing significant amounts of carbon in their biomass and soil, which helps mitigate climate change.
- **Livelihoods:** Coastal communities depend on mangroves for fisheries, honey collection, firewood, and medicinal plants.

Historical Exploitation and Decline: For centuries, mangrove forests were often viewed as wastelands or simply as a resource to be exploited, leading to significant deforestation.

- **Colonial Era Deforestation:** Under British colonial rule, large portions of the Sundarbans in West Bengal were systematically cleared for timber, fuel, and agricultural land. The Dampier-Hodges-Line was drawn in 1776, marking the boundary of tidal influence and the edge of the receding forest.

- **Post-independence Threats:** Following independence, mangrove degradation continued due to population pressure and unscientific management. India lost 40% of its mangrove area in the 20th century. Activities like shrimp farming, infrastructure development, and industrial pollution further accelerated this decline.
- **Regional Degradation:** Specific examples highlight the scale of the loss. Goa saw its mangrove cover plummet from 20,000 hectares in 1987 to just 500 hectares, while Maharashtra's mangroves dwindled from 200 km in the 1970s to 118 km by 2001.

Turning Point and Modern Conservation: Growing awareness of the catastrophic impacts of mangrove loss, including increased coastal vulnerability and reduced fisheries, prompted a major shift in policy.

Institutional milestones.

- **National Mangrove Committee (1976):** The government established this committee to advise on mangrove conservation and sustainable development. This was a direct response to a 1976 constitutional amendment emphasizing the state's duty to protect the environment.
- **Legislative Measures:** Key laws like the Indian Forest Act (1927), Wildlife (Protection) Act (1972), Forest Conservation Act (1980), and Environment (Protection) Act (1986) were used to protect mangrove areas. The Coastal Regulation Zone (CRZ) Notification, first introduced in 1991 and updated since, classifies mangroves as Ecologically Sensitive Areas.
- **Reserved and Protected Areas:** The Sundarbans was designated a National Park in 1984, a UNESCO World Heritage Site in 1987, and a Biosphere Reserve in 2001, conferring its highest level of protection. Bhitarkanika in Odisha and Pichavaram in Tamil Nadu have also been declared important protected sites.
- **Integrated Coastal Zone Management:** India has piloted Integrated Coastal Zone Management projects in several states, which include mangrove plantation and conservation activities.

Community and Grassroots Engagement: Since the 1990s, management strategies have shifted from a state-controlled model to a more collaborative, community-led approach.

- **Joint Mangrove Management (JMM):** Initiatives in states like Gujarat, Odisha, and Tamil Nadu involve local communities in the restoration and protection of mangroves.
- **Livelihood-focused Projects:** Projects like the GCF-ECRICC project in Andhra Pradesh, Maharashtra, and Odisha connect mangrove conservation with improved livelihoods, such as sustainable crab farming, to reduce reliance on forest exploitation.
- **Grassroots Activism:** A High Court ruling in Mumbai in 2005 classified mangroves as forests, leading to more assertive conservation efforts in Maharashtra and demonstrating the growing influence of civil society and the judiciary.

Present Status and Future Outlook:

- **Increased Mangrove Cover:** Thanks to conservation efforts, India's mangrove cover has seen a net increase, rising by 509.68 square km between 2001 and 2023.
- **Prominent Initiatives:** The Mangrove Initiative for Shoreline Habitats & Tangible Incomes (MISHTI) was launched in 2023 to expand mangrove plantations across nine states and four union territories.
- **State-level Achievements:** Gujarat has seen remarkable increases in its mangrove cover due to large-scale plantations and community participation.

Persistent Challenges and Future Strategy: Despite successes, India's mangroves still face serious threats from climate change, pollution, and coastal development. A 2025 study highlighted the unequal vulnerability of India's east and west coasts to climate change and rising sea levels, emphasizing the need for location-specific conservation strategies.

The Path Forward Focuses On:

- **Strengthening Legal Frameworks:** Further strengthening existing environmental laws to prevent encroachments and destructive activities.
- **Enhancing Community Engagement:** Promoting local empowerment and alternative livelihoods to build community resilience.
- **Advanced Monitoring:** Using technologies like drones and AI for better surveillance and management.
- **Restoration and Research:** Investing in the restoration of degraded mangrove areas and supporting scientific research to combat future threats.

Indian mangrove forests are hotspots of biodiversity, supporting a vast array of flora and fauna specially adapted to the harsh, saline environment. The specific composition of species varies by region, with the Sundarbans, Bhitarkanika, and the Andaman and Nicobar Islands being particularly rich.

Flora: Indian mangroves are home to a wide range of plant life, from true mangrove species that can only live in saline conditions to mangrove associates that can also survive elsewhere. Some major species are:

- ***Avicennia marina***: One of the most widely distributed species in India, high salt tolerance.
- ***Rhizophora mucronata***: Often called the red mangrove, its stilt roots that provide support in the unstable mud.
- ***Heritiera fomes***: Locally known as 'Sundari,' dominant in Sundarbans, and endangered.
- ***Sonneratia alba***: A pioneer species that colonizes newly formed mudflats.
- ***Excoecaria agallocha***: A common in central Sundarbans, known for its toxic milky latex.
- ***Nypa fruticans***: A stemless, palm-like mangrove that thrives in the least saline zones.

All these flora show regional variations in different Indian mangrove forests like **Andaman and Nicobar Islands, Bhitarkanika in Odisha** (considered a **"Mangrove Genetic Paradise"**), **Sundarbans (West Bengal),** and **Gujarat.**

Fauna: Indian mangroves provide a critical habitat, nursery, and foraging ground for a diverse range of animals, from aquatic invertebrates to apex predators.

Mammals:

- **Royal Bengal Tiger:** Sundarbans is the only mangrove habitat in the world to host a tiger population.
- **Fishing Cat:** Threatened species, one of the top carnivores in the Bhitarkanika mangroves.
- **Spotted Deer:** Common herbivore of Sundarbans and other mangrove ecosystems.
- **Andaman Wild Pig:** Found in the mangroves of the Andaman Islands.

Reptiles and Amphibians:

- **Saltwater Crocodile:** Bhitarkanika National Park hosts India's largest population of this predator.
- **Olive Ridley Turtle:** The Gahirmatha coast is the largest mass nesting site in the world for this endangered turtle.
- **King Cobra and Indian Python:** Several threatened species of these snakes refuged in mangroves.
- **Water Monitor Lizard:** This large lizard thrives in mangrove and estuarine environments.

Birds:

- **Kingfishers:** Bhitarkanika mangroves are notable for hosting six species of kingfishers.
- **Shorebirds and Waterfowls:** Mangroves are the staging grounds for migratory birds, including various waterfowl and shorebirds like the Black-tailed Godwit.
- **Raptors:** The white-bellied sea eagle and Brahminy kite are found here.
- **Mangrove Whistler:** Primarily restricted to Sundarbans and Bhitarkanika mangrove forests.

Aquatic Life:

- **Fish:** Mangrove forests are vital nurseries for fish, supporting both marine and freshwater species. The Sundarbans, for example, is home to over 250 species of fish.
- **Crustaceans:** The mud crab (*Scylla serrata*) is particularly well-known.
- **Molluscs:** A diverse array of molluscs inhabit the mudflats and mangrove roots.

References:

- https://lotusarise.com/mangrove-sites-in-india-upsc/
- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2115836
- https://www.drishtiias.com/to-the-points/paper3/mangrove-forests
- https://cwc.gov.in/sites/default/files/paper-research-work.pdf
- https://www.fao.org/4/x8080e/x8080e07.htm

Dr. Shaiphali Saxena
Assistant Professor
Department of Botany

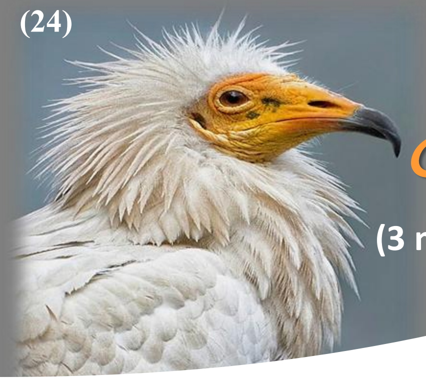

TECH-DRIVEN VULTURE CONSERVATION OF UTTARAKHAND

(3 minutes to read)

In a significant stride for wildlife conservation, the Uttarakhand Forest Department and WWF-India have released the state's first ever satellite telemetry report detailing the movements of endangered vultures. The landmark study, which utilized cutting-edge GPS transmitters to track resident raptor species, is part of a broader push to integrate advanced technology, including AI, into conservation efforts.

Inside the Landmark Telemetry Study

- **Tracking endangered raptors:** Between late 2023 and early 2024, five vultures from three threatened species—the White-rumped Vulture, Red-headed Vulture, and Egyptian Vulture—were fitted with 50g satellite tags. The study focused on the Corbett and Rajaji Tiger Reserves and the surrounding landscapes, where these birds were captured and released.
- **Data collection:** The tags, supplied by Ornitela, were programmed to collect data every 4 hours and transmit it every 12 hours. This allowed researchers to collect real-time data on the vultures' movement patterns, daily and seasonal foraging habits, and roosting locations.

Key Findings

- **Hotspot identification:** The report successfully identified critical habitats and movement corridors for the vultures.
- **Feeding sites:** The study revealed that many frequently visited foraging sites were at carcass disposal grounds near human settlements, such as those identified around Dehradun.
- **Ecological threats:** Researchers uncovered the serious threat posed by high-tension powerlines at these feeding sites, which can lead to bird mortality. Recommendations included installing bird flight diverters and line insulators to mitigate these risks.
- **Conservation planning:** The telemetry data will provide the Forest Department with a data-driven approach to creating strategic interventions and long-term conservation plans, especially for habitats outside traditional protected areas.

AI Joins the Fight for Wildlife Protection

Beyond satellite tracking, Uttarakhand is leveraging Artificial Intelligence (AI) to enhance conservation across the state. These AI-powered initiatives are creating a holistic and proactive approach to protecting wildlife.

- **AI for human-wildlife conflict mitigation:** A pilot project in the Narendra Nagar Forest division is using AI-powered devices to detect and mitigate human-wildlife conflict. The devices, installed in conflict-prone areas, use AI to detect animal movement within a 400-meter range. Upon detection, a siren is triggered, and alerts are sent to forest staff, enabling a rapid response to prevent potential conflicts.
- **Real-time wildlife monitoring with AI-powered cameras:** In the Corbett Tiger Reserve, new camera traps have been equipped with AI technology. Unlike traditional cameras, these new devices transmit captured photos in real-time to a server, where AI identifies the species. This allows forest officials to instantly alert nearby villagers about the presence of a wild animal, minimizing the risk of human-animal incidents.

- **Advanced ecosystem analysis:** The Garhwal Forest Division is using advanced AI tools to analyse complex ecosystem data, which helps in the development of a long-term forest management plan. By providing a more precise understanding of biodiversity, habitats, and watershed health, AI is allowing for more informed and tailored conservation strategies.

A new era of conservation

The collaborative effort by the Uttarakhand Forest Department and WWF-India, combined with the increasing adoption of AI, marks a new chapter in wildlife conservation for the state. By merging technology with on-the-ground ecological knowledge, Uttarakhand is building a robust, data-driven framework to protect its biodiversity, safeguard endangered species like vultures, and foster harmonious coexistence between humans and wildlife.

Dr. Shaiphali Saxena
Assistant Professor
Department of Botany

यात्रा
वृतांत
लेखक: डॉ० कविन्द्र भट्ट

(15 minutes to read)

Sacred Sojourn

Understanding the Cultural Significance of the Adi Kailash Yatra

Dr. Kavinder Bhatt
Assistant Professor, Department of English

The Adi Kailash Yatra, often referred to as the pilgrimage to **"Chhota Kailash"** or **"Little Kailash"**, is a sacred journey that holds profound spiritual, cultural, and historical significance for Hindus, Buddhists, and Jains alike. Nestled in the majestic Himalayan range in the Pithoragarh district of Uttarakhand, India, Adi Kailash stands at an altitude of approximately 5,945 meters (19,505 feet) near the Indo-Tibetan border. Revered as a divine abode of Lord Shiva and Goddess Parvati, this pilgrimage combines spirituality, adventure, and cultural immersion, offering devotees and travellers a transformative experience. Unlike the more famous Kailash Mansarovar Yatra in Tibet, the Adi Kailash Yatra is accessible entirely within India, making it a viable alternative for those seeking a similar spiritual connection without the logistical challenges of international travel.

This article delves deeply into the cultural, spiritual, and historical dimensions of the Adi Kailash Yatra, exploring its mythological roots, sacred sites, cultural interactions with local communities, environmental significance, and the modern-day relevance of this sacred sojourn.

The Mythological and Spiritual Significance of Adi Kailash

At the heart of the Adi Kailash Yatra lies its profound spiritual significance, deeply rooted in Hindu mythology. Adi Kailash, also known as Shiva Kailash, Baba Kailash, or Chhota Kailash, is believed to be the earthly abode of Lord Shiva, the Hindu deity associated with destruction, transformation, and spiritual enlightenment, and his consort, Goddess Parvati. According to ancient scriptures like the Puranas, Adi Kailash was a significant stop for Shiva and Parvati during their divine journey following their celestial marriage. It is said that the divine couple rested here, leaving behind a spiritual imprint that continues to resonate with pilgrims.

The mountain itself is considered a natural Shiva Lingam, a symbolic representation of Lord Shiva, due to its snow-capped shape. This resemblance to Mount Kailash in Tibet, the most revered of the Panch Kailash (five sacred Kailash peaks), enhances its sanctity. Adi Kailash is the second most important peak in this group, which includes Mount Kailash (Tibet), Shrikhand Mahadev Kailash, Kinnaur Kailash, and Manimahesh Kailash (all in Himachal Pradesh). The belief that Adi Kailash mirrors the spiritual energy of Mount Kailash makes it a powerful destination for devotees seeking divine blessings, purification, and moksha (liberation from the cycle of rebirth).

Hindu mythology is replete with stories that elevate the spiritual stature of Adi Kailash. One prominent legend associates the site with the Pandavas, the protagonists of the epic Mahabharata. It is believed that during their exile, the Pandavas, accompanied by Draupadi, visited Adi Kailash to seek the blessings of Lord Shiva. The pilgrimage is said to have cleansed their souls, strengthened their resolve, and played a crucial role in their eventual victory in the Kurukshetra war. Another tale recounts that the demon king Ravana, a devoted follower of Shiva, meditated at Adi Kailash for an extended period, earning the deity's blessings and immense power. The nearby Gauri Kund, a sacred lake at the foot of Adi Kailash, is steeped in its own mythology. Named after Goddess Parvati (also known as Gauri), the lake is believed to be a manifestation of her divine presence.

According to legend, Parvati bathed in its waters to regain her strength after defeating the demon Jalandhar, and it is also considered a site where her tears of joy fell upon reuniting with Shiva. Devotees often take a holy dip in Gauri Kund, believing it purifies them of sins and brings them closer to the divine.himalayandreamtreks.in

Another significant site, Parvati Sarovar, located approximately 2 km from Adi Kailash at an elevation of 4,497 meters, is revered as a replica of Lake Mansarovar in Tibet. It is said to embody the spiritual essence of Parvati's meditative energy, offering a serene space for reflection and prayer. The presence of these sacred water bodies enhances the spiritual allure of the region, making the yatra a holistic journey of devotion and purification.

One of the most awe-inspiring features of the Adi Kailash Yatra is Om Parvat, a nearby mountain famous for a natural snow formation that resembles the sacred Sanskrit symbol "Om" (ॐ). This phenomenon is considered a divine manifestation, believed to have been carved by Lord Shiva himself. The Om symbol holds profound significance in Hinduism, representing the primordial sound of the universe and the essence of creation, preservation, and destruction. For pilgrims, witnessing

Om Parvat is a moment of spiritual awakening, reinforcing the cosmic energy that permeates the region.
According to local beliefs, there are eight mountains worldwide with the Om symbol formed naturally in snow, but only Om Parvat has been discovered so far, adding to its mystique. The sight of this sacred symbol against the backdrop of the Himalayas evokes a sense of divine connection, making it a highlight of the yatra for both spiritual seekers and trekkers.

The Panch Kailash Context

Adi Kailash is part of the Panch Kailash, a collective term for five sacred peaks in the Himalayas, each associated with Lord Shiva. These include:

- **Mount Kailash (Tibet):** The most sacred, considered the cosmic abode of Shiva and Parvati.
- **Adi Kailash (Uttarakhand, India):** The primordial manifestation of Shiva's energy.
- **Shrikhand Mahadev Kailash (Himachal Pradesh):** Known for its towering Shiva Lingam formed by a natural rock face.
- **Kinnaur Kailash (Himachal Pradesh):** Associated with celestial musicians (Kinners) who perform for Shiva.
- **Manimahesh Kailash (Himachal Pradesh):** Revered for its sacred lake, believed to be Shiva's mirror.

The Panch Kailash Yatra is considered a pathway to salvation, with devotees believing that visiting all five peaks can lead to liberation from the cycle of rebirth. Adi Kailash's accessibility within India, combined with its spiritual equivalence to Mount Kailash, makes it a popular choice for pilgrims unable to undertake the journey to Tibet due to geopolitical or logistical constraints.

The Cultural Significance of the Adi Kailash Yatra

Interaction with Indigenous Communities

The Adi Kailash Yatra is not only a spiritual journey but also a cultural odyssey that offers opportunities to engage with the indigenous communities of the Kumaon region, particularly the Shauka and Rang tribes. These communities, who have thrived in the rugged Himalayan terrain for generations, serve as custodians of the yatra routes, guiding pilgrims with their intimate knowledge of the landscape.

The Shauka and Rang people are known for their rich cultural heritage, which includes traditional attire, wooden craftsmanship, and vibrant folklore. Their lifestyle reflects a harmonious relationship with nature, aligning with Buddhist principles of mindful existence and environmental stewardship. Pilgrims often interact with these communities in villages such as Gunji, Nabi, and Kuti, gaining insights into their customs, rituals, and hospitality.

For instance, the village of Kuti is named after Kunti, the mother of the Pandavas, and is believed to be her ancestral home, adding a layer of mythological significance to the cultural experience.
These interactions provide a deeper understanding of the region's culture. Pilgrims may witness local festivals, traditional music, and dance forms that reflect the syncretic blend of Hindu and Tibetan influences. The warmth and simplicity of the locals, combined with their deep-rooted spiritual beliefs, create a sense of community that enhances the pilgrimage experience.

Sacred Sites and Temples

The Adi Kailash Yatra is dotted with sacred sites and temples that enrich its cultural and spiritual significance. The Adi Kailash Temple, located at the base of the mountain, is a central point of worship where devotees offer prayers and perform rituals to seek Shiva's blessings. The temple's serene ambiance and its proximity to the sacred peak create a powerful spiritual environment.
Other notable sites include:

- **Narayan Ashram:** Founded in 1936 by Narayan Swami, this spiritual retreat is nestled amidst rare vegetation and fruit gardens. It serves as a place for meditation and introspection, offering pilgrims a moment of tranquility amidst the rugged terrain.
- **Kali Mata Temple:** Located near Om Parvat, this shrine is dedicated to Goddess Kali, another form of Parvati, and is a significant stop for pilgrims seeking divine protection.

These sites, steeped in mythology and local lore, provide pilgrims with opportunities to participate in traditional rituals, such as offering prayers and taking holy dips in sacred lakes. The rituals are often guided by local priests who share insights into their symbolic meanings, deepening the pilgrims' connection to the region's spiritual heritage.

Culinary Traditions

The culinary traditions of the region further enrich the cultural experience. Uttarakhand's cuisine is known for its simplicity and use of local ingredients, reflecting the region's agrarian lifestyle. Dishes like Chainsoo, a lentil curry made with black gram dal, and Kafuli, a green leafy vegetable curry, are

staples that pilgrims can enjoy at local eateries or homestays. These meals, often served with steamed rice or chapatis, embody the earthy flavors of the Himalayas and provide a taste of the region's culinary heritage. Engaging with locals while dining offers insights into traditional cooking techniques and the cultural significance of food in the region.

The Journey: Routes, Challenges, and Modern Developments

The Adi Kailash Yatra can be undertaken via two primary routes, each offering a unique blend of scenic beauty and spiritual significance:

- **Route via Gunji (Eastern-Southeastern Route):** This motorable route follows the Pithoragarh-Lipulekh Pass Highway and the Gunji-Lampiya Dhura Pass Road, passing through the Kuthi Yankti Valley to reach Jolingkong Lake, near the Adi Kailash base camp. Permits are issued at Dharchula, where medical check-ups are also conducted.
- **Route via Darma Valley (Western-Southwestern Route):** This route involves trekking through the Darma Valley, crossing the Sin La pass near Brahma Parvat, and continuing to the Kuthi Yankti Valley to reach Jolingkong Lake. This route is more challenging but offers stunning views of the Himalayan landscape.

Both routes pass through picturesque villages, lush valleys, and sacred sites, providing pilgrims with opportunities to immerse themselves in the natural and cultural beauty of the region.
The Adi Kailash Yatra is a physically demanding endeavor due to its high-altitude terrain, rugged trails, and unpredictable weather conditions.

Pilgrims must be prepared for steep ascents, river crossings, and long hours of walking, often at elevations above 10,000 feet. Altitude sickness is a significant concern, requiring proper acclimatization and medical precautions.
Logistically, the yatra requires an Inner Line Permit (ILP) due to its proximity to the Indo-China border. Foreign nationals may need additional permissions. Pilgrims are advised to travel with registered tour operators who provide guidance, accommodation, and support for obtaining permits. Basic accommodations, such as guesthouses and homestays, are available in villages like Dharchula, Gunji, and Kuti, but facilities are minimal, reflecting the remote nature of the region.

Modern Developments

In recent years, improvements in infrastructure have made the Adi Kailash Yatra more accessible. The development of motorable roads has reduced the trekking distance, with some packages now offering vehicular travel for the entire journey. For example, the route from Gunji to Jolingkong is now drivable, making the yatra feasible for older pilgrims or those with physical limitations. The Indian government has also promoted the yatra as part of its efforts to boost spiritual tourism, with organized packages available from May to October, avoiding the monsoon season when landslides are common.

Despite these advancements, the yatra retains its spiritual and adventurous essence. The reduced trekking requirement has not diminished the sense of accomplishment and divine connection that pilgrims experience upon reaching Adi Kailash.

Environmental and Ethical Considerations

The pristine Himalayan environment surrounding Adi Kailash is a testament to the region's untouched beauty. The area is home to rare flora, such as rhododendrons and medicinal herbs, and unique wildlife, including Himalayan blue sheep and snow leopards. The Buddhist principle of harmony with nature is reflected in the practices of local communities, who emphasize sustainable living and environmental preservation.

Pilgrims are encouraged to adopt eco-friendly practices, such as avoiding littering and respecting the natural landscape. The presence of prayer flags and stone cairns along the route, placed by devotees over centuries, symbolizes the spiritual bond between humans and the environment. These markers serve as reminders of the collective devotion that has shaped the yatra's legacy.
Respecting local customs and traditions is paramount during the Adi Kailash Yatra. Pilgrims are advised to approach sacred sites with reverence, follow the guidance of local priests and guides, and adhere to governmental regulations. Observing a sattvic (pure vegetarian) diet, as recommended in Hindu scriptures, is a common practice among devotees to maintain spiritual purity during the journey.

Engaging with local communities respectfully, seeking permission before photographing rituals or individuals, and supporting local economies through patronage of homestays and eateries are ways to ensure a meaningful and ethical pilgrimage.

The Modern-Day Relevance of the Adi Kailash Yatra

In today's fast-paced world, the Adi Kailash Yatra offers a respite from the chaos of modern life, providing an opportunity for introspection and spiritual renewal. The serene environment, coupled with the physical and mental challenges of the journey, fosters a sense of self-discovery and resilience. Many pilgrims report experiencing a profound sense of peace and clarity upon completing the yatra, attributing it to the divine energy of Adi Kailash and the natural beauty of the Himalayas.

For adventure seekers, the yatra combines spirituality with the thrill of exploring one of the most pristine regions of the Himalayas. The breathtaking landscapes, from snow-capped peaks to lush valleys, offer a visual feast that complements the spiritual experience.

The Adi Kailash Yatra plays a crucial role in preserving the cultural heritage of the Kumaon region. By engaging with local communities, pilgrims contribute to the economic sustainability of remote villages, encouraging the continuation of traditional practices. The Indian government's promotion of the yatra as a spiritual tourism destination has also brought attention to the region's cultural and natural treasures, fostering greater appreciation and conservation efforts.

While deeply rooted in Hinduism, the Adi Kailash Yatra transcends religious boundaries, attracting Buddhists, Jains, and spiritual seekers from diverse backgrounds. The universal themes of devotion, perseverance, and connection with nature resonate with people worldwide, making the yatra a symbol of spiritual unity.

The Adi Kailash Yatra is more than a pilgrimage; it is a sacred sojourn that weaves together spirituality, culture, and adventure in the heart of the Himalayas. Its mythological significance as the abode of Lord Shiva and Goddess Parvati, coupled with its breathtaking landscapes and rich cultural heritage, makes it a transformative experience for devotees and travelers alike. From the divine symbolism of Om Parvat to the serene waters of Gauri Kund and Parvati Sarovar, every aspect of the yatra invites pilgrims to connect with the divine and the natural world.

By engaging with local communities, participating in sacred rituals, and navigating the challenges of the Himalayan terrain, pilgrims embark on a journey that is both physically demanding and spiritually uplifting. The Adi Kailash Yatra stands as a testament to humanity's enduring quest for meaning, enlightenment, and unity with the divine, ensuring its place as one of the most revered pilgrimages in the world.

For those planning to undertake this sacred journey, preparation is key—physically, mentally, and spiritually. With proper planning, respect for local customs, and an open heart, the Adi Kailash Yatra promises to be a life-changing experience that leaves an indelible mark on the soul.

References

- Atkinson, E. T. (2020). *The Himalayan gazetteer* (Vol. II, Part I). Vintage Books. (Original work published 1882–1886)
- Bergmann, C. (2016). *The Himalayan border region: Trade, identity, and mobility*. Springer. https://doi.org/10.1007/978-3-319-29707-1
- Bhatt, G. P. (Trans.). (1970). *Skanda Purana: Kedara Khanda* (Chapters 12–15). Motilal Banarsidass.
- Channa, S. M. (2013). *The Bhotiyas of the Himalayas: Identity, economy, and change*. Routledge India. https://doi.org/10.4324/9780203084205
- Devbhoomi Tourism. (2025). *Adi Kailash Yatra 2025: Detailed itinerary & testimonials*. https://devbhoomitourism.com/adi-kailash-yatra
- Kumaon Mandal Vikas Nigam. (2025). *Adi Kailash Yatra brochure 2025*. https://www.kmvn.gov.in/tours/adi-kailash-yatra
- Ministry of Home Affairs, Government of India. (n.d.). *Inner Line Permit (ILP) guidelines for Pithoragarh District*. Pithoragarh District Administration. Retrieved October 27, 2025, from https://pithoragarh.nic.in/ilp
- Nand, N., & Kumar, K. (2021). Flora of the Adi Kailash region: A botanical survey. *Indian Journal of Forestry*, 44(2), 89–102.
- Rawat, D. S. (2018). Sacred geography of the Kumaon Himalayas: A study of Adi Kailash and Om Parvat. *Journal of Himalayan Studies*, 12(3), 45–62. https://doi.org/10.3126/jhs.v12i3.21789
- Sax, W. S. (2010). *God of justice: Ritual healing and social justice in the Central Himalayas*. Oxford University Press. https://doi.org/10.1093/acprof:oso/9780195335238.001.0001
- Shastri, J. L. (Trans.). (1950). *Shiva Purana: Vidyesvara Samhita* (Chapter 25). Motilal Banarsidass.
- Sukthankar, V. S. (Ed.). (1942). *Mahabharata: Vana Parva* (Book 3, Chapters 80–82). Bhandarkar Oriental Research Institute.
- *The Himalayan Times*. (2024, August 15). Om Parvat: The only visible 'Om' in snow. https://www.thehimalayantimes.com
- Uttarakhand Tourism Development Board. (2025). *Adi Kailash Yatra official portal*. https://uttarakhandtourism.gov.in/destination/adi-kailash
- Wildlife Institute of India. (2023). *Faunal diversity report: Vyans Valley & Adi Kailash landscape*. https://wii.gov.in/reports/adi-kailash-fauna

समसामयिकी

(अंक अक्टूबर)

समसामयिकी

- भारतीय रिजर्व बैंक के डिप्टी गवर्नर निम्न में से किसे नियुक्त किया गया है? शिरीष चन्द्र मुर्मु
- मुखी भारत में जन्मा पहला वयस्क चीता बन गया है। इसका जन्म किस राष्ट्रीय उद्यान में हुआ था? कुनो राष्ट्रीय उद्यान
- भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (BCCI) के 37वें अध्यक्ष किसे नियुक्त किया गया है? मिथुन मन्हास
- भारत के पहले मैरीटाइम सिमुलेशन सेंटर का उद्घाटन किस राज्य में किया गया? आंध्र प्रदेश
- विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2025 में भारत के लिए पहला स्वर्ण पदक किसने जीता है? शैलेश कुमार
- 2025 महिला क्रिकेट विश्व कप के दौरान अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (ICC) और किसने समान अवसरों और बाल अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए 'प्रॉमिस टू चिल्ड्रन' अभियान शुरू किया है? यूनिसेफ (UNICEF)
- कोल्ड डेजर्ट बायोस्फीयर रिजर्व किस राज्य में स्थित है जिसे सितंबर 2025 में यूनेस्को के बायोस्फीयर रिजर्व के विश्व नेटवर्क में शामिल किया गया है? हिमाचल प्रदेश
- हाल ही में भारत ने किस देश के साथ पहली सीमा पार रेल संपर्क स्थापित करने के लिए समझौता किया है? भूटान
- मानव-हाथी संघर्ष की बढ़ती चुनौती से निपटने के लिए गज रक्षक ऐप किस राज्य में किया गया है? मध्य प्रदेश
- राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC) का महानिदेशक किसे नियुक्त किया गया है? वीरेन्द्र वत्स
- आर्थिक स्वतंत्रता सूचकांक 2025 में किस देश को पहला स्थान दिया गया है? सिंगापुर
- हाल ही में किस देश को अंतर्राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन (ICAO) की परिषद के भाग II के लिए पुनः निर्वाचित किया गया है? भारत
- "विंग्स ऑफ वैलोर" नामक किताब किसके द्वारा लिखी गयी है? स्वप्निल पांडे
- जूडो जूनियर विश्व चैंपियनशिप में भारत के लिए पहला पदक जीतने वाली खिलाड़ी कौन बन गयी है? लिनथोई चनम्बम
- रूपिन फ़ोर्टुनाट ज़फ़ीसाम्बो को हाल ही में किस देश का प्रधान मंत्री नियुक्त किया गया है? मेडागास्कर
- दक्षिण पूर्व एशिया का पहला कोरल क्रायोबैंक किस देश ने लॉन्च किया है? फिलिपींस
- भौतिकी का नोबेल पुरस्कार 2025 किसे दिया गया है? जॉन क्लार्क, मिशेल डेवोरेट और जॉन एम. मार्टिनिस
- अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN) विश्व संरक्षण कांग्रेस का आयोजन कहाँ किया जाएगा? अबु धाबी
- नवी मुंबई अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे का नाम बदलकर क्या रखा गया है? लोकनेते डीबी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा
- भारत का एकमात्र मड ज्वालामुखी कहाँ स्थित है जिसमें 20 साल बाद विस्फोट हुआ है? अंडमान निकोबार
- भारत की पहली वाणिज्यिक कोयला खदान किस राज्य में शुरू की गयी है? अरुणाचल प्रदेश
- मिलावटी और नकली दवाओं को रोकने के लिए किस राज्य सरकार ने औषधि निरीक्षकों को औषधि रसायनों के निरीक्षण का अधिकार दिया है? उत्तर प्रदेश

- शहरों में वन्यजीव और पारिस्थितिक पर्यटन को बढ़ाने के लिए किस शहर में वैश्विक वन्यजीव मेले आयोजित किया गया है? दिल्ली
- भारत का पहला पूर्णत सौर ऊर्जा से संचालित चिड़ियाघर निम्न में से किस राज्य में बनाया जाएगा? कर्नाटक
- किस राज्य में गरीब परिवारों को आर्थिक सहायता देने के लिए Orunodoi 3.0 योजना को शुरु किया गया है? असम
- किस देश ने अपनी सुरक्षा को मजबूत करने के लिए टी डोम नामक वायु रक्षा प्रणाली को विकसित करने की घोषणा की है? ताइवान
- 'द ब्रह्मास्त्र अनलीश्ड' नामक किताब किसके द्वारा लिखी गई है? टी. शिवानंदन
- सरकारी और निजी दोनों क्षेत्रों में मासिक धर्म अवकाश नीति लॉन्च करने वाला भारत का पहला राज्य कौन बन गया है? कर्नाटक
- DRDO ने किस संगठन के साथ 300 मेगावाट क्षमता के सौर ऊर्जा आधारित नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के लिए MOU साइन किया है? सोलर एनर्जी कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (SECI)
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में कौन-सी योजना लॉन्च की? पीएम धन धान्य कृषि योजना और मिशन फॉर आत्मनिर्भरता इन पल्सेस
- डॉ. सोनाली घोष ने हाल ही में किस प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार को जीतकर इतिहास रचा है? IUCN WCPA–Kenton Miller Award
- भारत में चीनी पटाखों की अवैध तस्करी को रोकने के लिए राजस्व खुफिया निदेशालय द्वारा शुरू किए गए अभियान का नाम क्या है? ऑपरेशन फायर ट्रेल
- क्षेत्रीय संपर्क योजना – उड़ान (उड़े देश का आम नागरिक) का मुख्य उद्देश्य क्या है? हवाई यात्रा को सस्ता बनाना और छोटे शहरों व कस्बों को जोड़ना
- बोलीविया का 2025 का राष्ट्रपति चुनाव किसने जीता? रोड्रिगो पाज़
- अक्टूबर 2025 में अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच युद्धविराम में किन देशों ने मध्यस्थता की? कतर और तुर्की
- हाल ही में 93 वर्ष की आयु में निधन होने वाली थाईलैंड की प्रिय और सम्मानित राजशाही हस्ती कौन थीं, जिन्हें "ग्रीन क्वीन" के नाम से भी जाना जाता था? क्वीन मदर सिरीकित
- हाल ही में किस भारतीय बल्लेबाज़ ने सौरव गांगुली को पीछे छोड़ते हुए वनडे अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट (ODI) में भारत के तीसरे सर्वाधिक रन बनाने वाले खिलाड़ी बनने का गौरव प्राप्त किया? रोहित शर्मा
- किस भारतीय बैंक को अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन ग्लोबल फाइनेंस द्वारा "विश्व का सर्वश्रेष्ठ उपभोक्ता बैंक 2025" (World's Best Consumer Bank 2025) पुरस्कार से सम्मानित किया गया? भारतीय स्टेट बैंक
- जापान-भारत समुद्री अभ्यास (JAIMEX–25) में भारतीय नौसेना का कौन सा जहाज शामिल हुआ? आईएनएस सह्याद्री
- भारत और यूनाइटेड किंगडम ने हाल ही में किस नए वैज्ञानिक फेलोशिप कार्यक्रम की शुरुआत की है? रामानुजन जूनियर रिसर्चर्स प्रोग्राम
- भारत को हाल ही में किस संगठन के COP10 के ब्यूरो का उप-अध्यक्ष (Vice-Chairperson) दोबारा चुना गया है? अंतरराष्ट्रीय कन्वेंशन अगेंस्ट डोपिंग इन स्पोर्ट
- दुनिया की सबसे तेज़ बुलेट ट्रेन CR450 किस देश द्वारा विकसित की गई है? चीन
- भारत का पहला Cable Suspension Glass Bridge — 'Bajrang Setu' कहाँ बनाया गया है? ऋषिकेश, उत्तराखण्ड

- भारत को हाल ही में किस संगठन के COP10 के ब्यूरो का उप-अध्यक्ष (Vice-Chairperson) दोबारा चुना गया है? अंतरराष्ट्रीय कन्वेंशन अगेंस्ट डोपिंग इन स्पोर्ट
- दुनिया की सबसे तेज़ बुलेट ट्रेन CR450 किस देश द्वारा विकसित की गई है? चीन
- भारत का पहला Cable Suspension Glass Bridge — ‘Bajrang Setu’ कहाँ बनाया गया है? ऋषिकेश, उत्तराखण्ड
- नासा द्वारा खोजे गए पृथ्वी के दूसरे अस्थायी चंद्रमा का क्या नाम है? 2025 PN7
- किसे भारत के सर्वोच्च वैज्ञानिक सम्मान "विज्ञान रत्न पुरस्कार" से सम्मानित किया गया है? जयंत विष्णु नार्लीकर
- एशिया पैसिफिक एक्सीडेंट इन्वेस्टिगेशन ग्रुप (APAC – AIG) की बैठक का आयोजन कौन सा देश पहली बार कर रहा है? भारत
- बहरीन में आयोजित तीसरे एशियन यूथ गेम्स 2025 में भारतीय वेटलिफ्टर प्रीतिस्मिता भोई ने कौन सा पदक जीतकर इतिहास रच दिया है? स्वर्ण पदक
- भारत के 53वें मुख्य न्यायाधीश के रूप में किसे नियुक्त किया जाएगा? सूर्यकांत
- कैथरीन कोनोली को किस देश का राष्ट्रपति नियुक्त किया गया है? आयरलैंड
- एयर क्वालिटी इंडेक्स 2025 के अनुसार किस शहर को भारत का सबसे साफ़ शहर घोषित किया गया है? पुणे
- दुनिया का पहला 3D विंड डेटा सैटेलाइट सिस्टम, फेइलियन कॉन्स्टेलेशन किसके द्वारा लगाया जाएगा? स्टेलेरस
- भारत में आयोजित कोगनिवेरा अंतर्राष्ट्रीय पोलो कप 2025 का खिताब किस देश ने जीता है? भारत
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किस वर्ष को ‘आसियान – भारत समुद्री सहयोग वर्ष’ घोषित किया है? 2026
- कोयला क्षेत्र में पारदर्शिता और डिजिटल शासन को बढ़ावा देने के लिए केंद्रीय कोयला और खान मंत्री ने कौन से दो डिजिटल प्लेटफॉर्म लॉन्च किए हैं? कोयला शक्ति डैशबोर्ड और क्लैम्प पोर्टल
- हाल ही में ‘रोड्रिगो पाज पेरेरा’ किस दक्षिण अमेरिकी देश के नए राष्ट्रपति बने हैं? अर्जेंटीना
- हाल ही में कौन सर्वोच्च न्यायालय समिति की पहली ट्रांसजेंडर सदस्य बनी हैं? अक्कई पद्मशाली

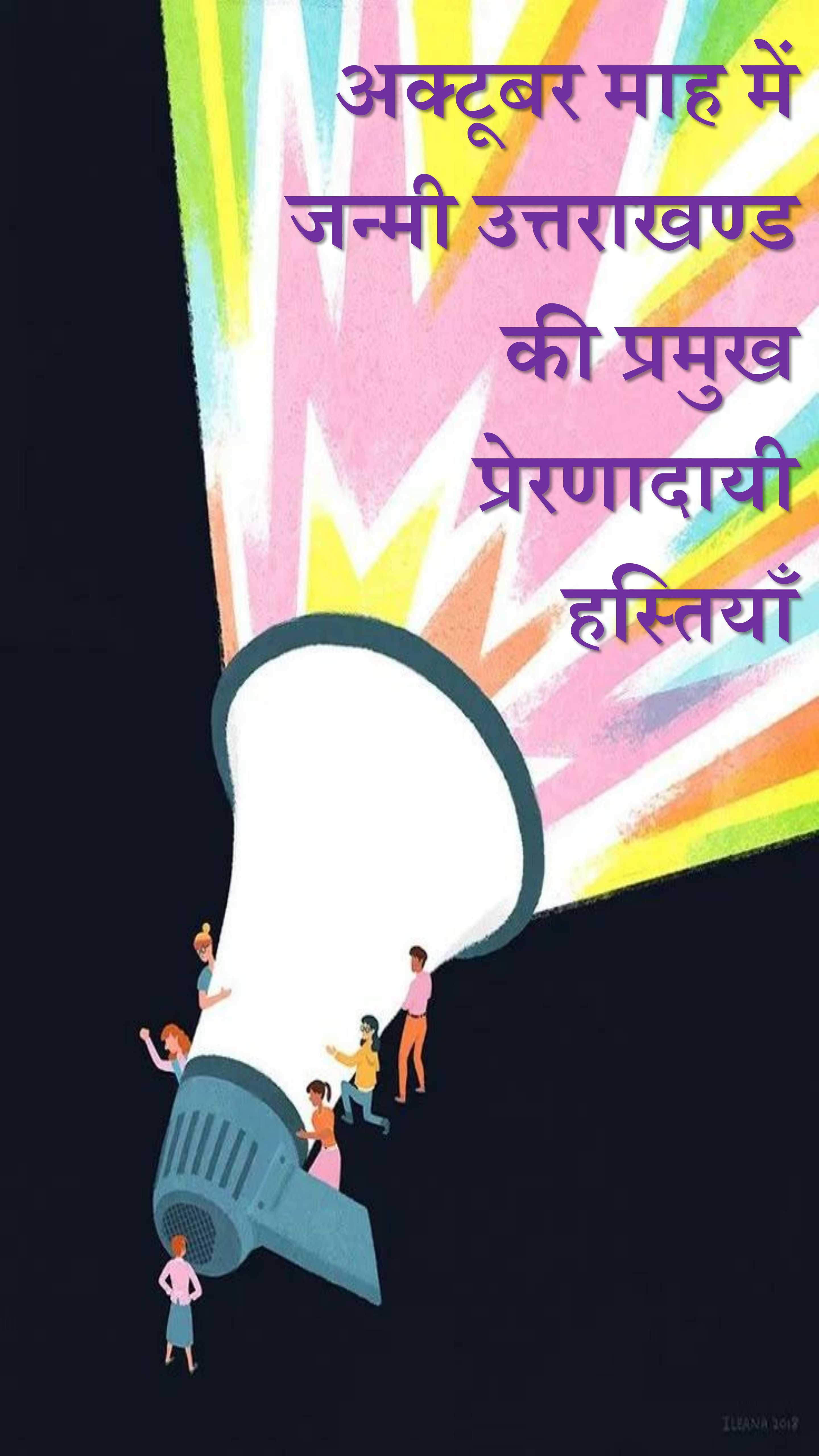
अक्टूबर माह में
जन्मी उत्तराखण्ड
की प्रमुख
प्रेरणादायी
हस्तियाँ

अक्टूबर माह में जन्मी उत्तराखण्ड की प्रेरणादायी हस्तियाँ

जब किसी राज्य या क्षेत्र की प्रसिद्ध हस्तियों की बात आती है, तो कई पहलुओं और क्षेत्रों पर चर्चा की जा सकती है। इन प्रसिद्ध हस्तियों ने जिन क्षेत्रों में अपना योगदान दिया है, वे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से समाज के उत्थान में सहायक होते हैं। उत्तराखण्ड की प्रसिद्ध हस्तियाँ समाज के विभिन्न क्षेत्रों जैसे खेल, राजनीति, रक्षा, साहित्य, कला-संस्कृति और शिक्षा से उभरी हैं। इस लेख में हम अक्टूबर माह में जन्मी निम्नलिखित प्रमुख व्यक्तित्वों पर ध्यान केंद्रित करेंगे:

1. बिशनी देवी शाह **(12 अक्टूबर, 1902):** भारतीय इतिहास में एक उल्लेखनीय व्यक्तित्व के रूप में विख्यात हैं, जिन्हें स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के कारण जेल जाने वाली उत्तराखण्ड की पहली महिला के रूप में याद किया जाता है। उनकी जीवनगाथा दृढ़ता, साहस और स्वतंत्रता एवं आत्मनिर्भरता के आदर्शों के प्रति अटूट प्रतिबद्धता की कहानी है। व्यक्तिगत कठिनाइयों और सामाजिक कलंकों का सामना करने के बावजूद, वे महिलाओं के लिए आशा की किरण और भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक अग्रणी महिला के रूप में उभरीं।

2. ब्रिगेडियर सुरेंद्र सिंह पंवार **(जन्म 19 अक्टूबर 1919):** भारतीय सेना में एक प्रतिष्ठित तोपखाने अधिकारी थे। उनका जन्म और निधन दोनों देहरादून में हुआ था। उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध, 1947 के भारत-पाकिस्तान युद्ध और 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में हिस्सा लिया।

3. नारायण दत्त तिवारी **(जन्म 18 अक्टूबर 1925):** उत्तराखण्ड के पहले मुख्यमंत्री के रूप में सेवा देने के अलावा, वह उत्तर प्रदेश के भी मुख्यमंत्री रहे। उनका जन्म नैनीताल के बलूटी गाँव में हुआ था। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भी भाग लिया और इलाहाबाद विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान और कानून की पढ़ाई की।

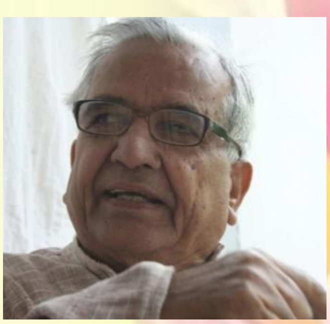

4. शेखर जोशी **(4 अक्टूबर 1932):** प्रसिद्ध हिंदी लेखक शेखर जोशी का जन्म अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड में हुआ था। उन्हें कुमाऊं की संस्कृति, परंपराओं और लोगों के जीवन शैली की गहरी समझ के लिए जाना जाता है। उनकी कुछ प्रसिद्ध कृतियों में दाज्यू (बड़े भाई) और कोसी का घटवार शामिल हैं।

5. राधा भट्ट (जन्म 16 अक्टूबर 1931): अल्मोड़ा के धुरका गाँव में जन्मी राधा भट्ट एक गांधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता और पर्यावरणविद् हैं। उन्होंने चिपको आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और महिला सशक्तिकरण के लिए काम किया है। उन्हें 2025 में समाज सेवा के लिए पद्म श्री से सम्मानित किया गया।

6. हिमानी शिवपुरी (जन्म 24 अक्टूबर 1960): देहरादून में जन्मी, यह एक जानी-मानी बॉलीवुड और टेलीविजन अभिनेत्री हैं। उन्होंने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से अभिनय की शिक्षा ली और कई मशहूर फिल्मों में चरित्र भूमिकाएं निभाईं, जैसे हम आपके हैं कौन..! और दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे।

7. ऋषभ पंत (जन्म 4 अक्टूबर 1997): भारतीय क्रिकेट टीम के विकेटकीपर-बल्लेबाज, ऋषभ पंत का जन्म रुड़की में हुआ था। वह अपने आक्रामक खेल और बेहतरीन स्ट्रोक्स के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने क्रिकेट प्रशिक्षण 12 साल की उम्र में दिल्ली की सोनेट क्रिकेट अकादमी में शुरू किया था, जहाँ उन्हें कोच तारक सिन्हा ने प्रशिक्षित किया।

8. नेहा सक्सेना (जन्म 25 अक्टूबर 1989): देहरादून में जन्मी, यह अभिनेत्री मलयालम, कन्नड़ और तुलु जैसी कई भारतीय फिल्म उद्योगों में काम कर चुकी हैं।

9. सोनिया शर्मा (जन्म 30 अक्टूबर 1991): हरिद्वार में जन्मीं अभिनेत्री सोनिया शर्मा अदालत जैसे टीवी धारावाहिकों में अपने अभिनय के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने अभिनय में कदम रखने से पहले पत्रकार के रूप में भी काम किया था।

अक्टूबर माह के प्रेरणादायी व्यक्तित्व

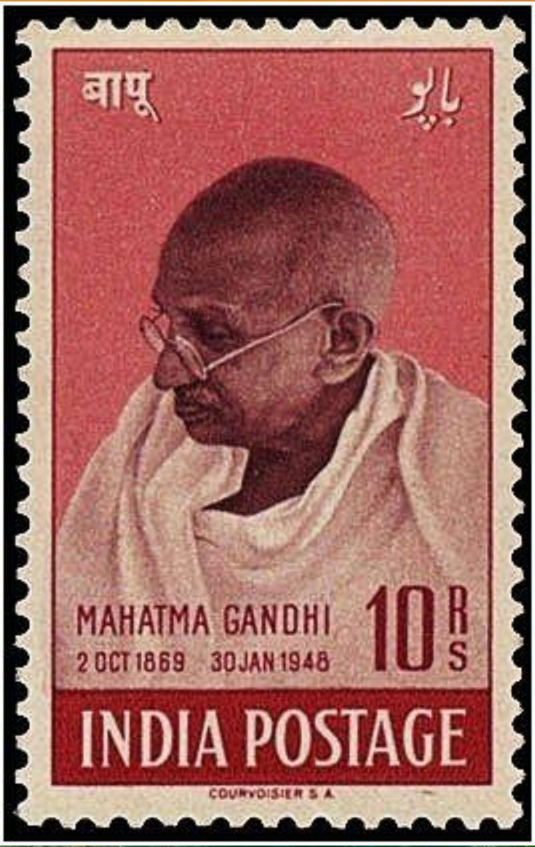

एक जीवन परिचय

एक विनम्र बैरिस्टर से 'राष्ट्रपिता' बनने की असाधारण यात्रा

पोरबन्दर का मोहनदास, जो कभी एक शर्मीला और संकोची विद्यार्थी था, दुनिया के सबसे प्रभावशाली नेताओं में से एक कैसे बन गया? उनकी यह कहानी सिर्फ एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि एक युग की है– एक ऐसे समय की, जब एक साधारण सी लाठी ने शक्तिशाली साम्राज्य की नींव हिला दी। महात्मा गांधी का जीवन एक गहन चिंतन, सतत प्रयोग और अदम्य साहस की गाथा है।

बैरिस्टर के जूते और नस्लीय कटुता का सामना

सन् 1888 में, मोहनदास करमचंद गांधी एक युवा बैरिस्टर के रूप में लंदन से लौटकर भारत आए। उनका मन सपनों से भरा था, लेकिन वकालत की राह आसान नहीं थी। 1893 में, एक कानूनी मामले के सिलसिले में वे दक्षिण अफ्रीका गए। यह यात्रा उनके जीवन का निर्णायक मोड़ साबित हुई। वहां उन्हें गोरे और काले के बीच गहरे नस्लीय भेदभाव का सामना करना पड़ा। एक ट्रेन यात्रा के दौरान उन्हें जबरन प्रथम श्रेणी के डिब्बे से बाहर निकाल दिया गया। यह अपमान केवल उनका नहीं था, बल्कि हर उस भारतीय का था, जो उस भूमि पर समान नागरिकता का हकदार था। इस घटना ने एक विनम्र बैरिस्टर को 'सत्याग्रह' के जन्मदाता में बदल दिया।

सत्याग्रह का उदय- आत्मा की शक्ति

दक्षिण अफ्रीका में लगभग 21 वर्षों तक रहते हुए, गांधीजी ने अन्याय के खिलाफ संघर्ष किया और अहिंसक प्रतिरोध का एक नया दर्शन गढ़ा, जिसे उन्होंने 'सत्याग्रह' नाम दिया। सत्याग्रह का अर्थ था 'सत्य के लिए आग्रह' या 'आत्मा की शक्ति'। यह कोई निष्क्रिय प्रतिरोध नहीं, बल्कि एक नैतिक और आध्यात्मिक संघर्ष था। इस दौरान उन्होंने अपना पहला सत्याग्रह 1906 में जोहान्सबर्ग में शुरू किया, जब एशियाई लोगों के लिए पंजीकरण कराना और उंगलियों के निशान देना अनिवार्य कर दिया गया था। इस संघर्ष में उनकी पत्नी कस्तूरबा ने भी उनका साथ दिया।

भारत वापसी और स्वतंत्रता की लौ

सन् 1915 में भारत लौटने पर गांधीजी ने सबसे पहले देश की जमीनी हकीकत को समझा। उन्होंने गोपाल कृष्ण गोखले को अपना राजनीतिक गुरु बनाया और भारत की आत्मा को समझने के लिए देशव्यापी यात्राएं कीं। उनकी सादगी, खादी पहनने और आम लोगों से जुड़ने की आदत ने उन्हें जल्द ही जनता का प्रिय बना दिया। उनके नेतृत्व में शुरू हुए चंपारण और खेड़ा सत्याग्रह ने किसानों के शोषण के खिलाफ एक मजबूत आवाज उठाई।

आजादी की लड़ाई में गांधी का मंत्र

गांधी जी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी। उनके प्रमुख आंदोलनों ने ब्रिटिश हुकूमत की चूलें हिला दीं।

- **असहयोग आंदोलन (1920):** गांधीजी ने असहयोग का नारा देकर ब्रिटिश सरकार के साथ किसी भी प्रकार के सहयोग से इनकार करने का आह्वान किया।

- **सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930):** दांडी मार्च के रूप में शुरू हुआ यह आंदोलन नमक कानून को तोड़कर ब्रिटिश सत्ता को खुली चुनौती था।
- **भारत छोड़ो आंदोलन (1942):** "करो या मरो" का नारा देकर उन्होंने भारत को पूर्ण स्वतंत्रता दिलाने का अंतिम प्रयास किया।

दर्शन का सार

गांधी जी का जीवन केवल राजनीतिक संघर्ष तक सीमित नहीं था। उनके दर्शन ने एक बेहतर समाज की रूपरेखा भी प्रस्तुत की:

- **सत्य और अहिंसा:** ये उनके दो मूल मंत्र थे। उनका मानना था कि इन दो सिद्धांतों से दुनिया की हर समस्या का समाधान संभव है।
- **स्वदेशी और चरखा:** उन्होंने स्वदेशी उत्पादों के उपयोग पर जोर दिया और चरखे को आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता का प्रतीक बनाया।
- **सर्वोदय:** समाज के सबसे कमजोर तबके का उत्थान उनका सबसे बड़ा लक्ष्य था।

एक उदास अंत, एक चिरस्थायी विरासत

सन् 1947 में जब भारत को आजादी मिली, तो देश का विभाजन हुआ। यह देखकर गांधीजी बहुत दुखी हुए। 30 जनवरी, 1948 को नाथूराम गोडसे ने प्रार्थना सभा में उनकी गोली मारकर हत्या कर दी। इस घटना ने पूरे विश्व को स्तब्ध कर दिया, लेकिन यह अंत नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत थी। गांधीजी आज भी सत्य, अहिंसा और न्याय के प्रतीक के रूप में हमारे बीच जीवित हैं। उनकी जयंती, 2 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो उनकी वैश्विक विरासत का प्रमाण है।

गांधीजी का जीवन हमें सिखाता है कि विश्वास, साहस और दृढ़ता के बल पर सबसे शक्तिशाली साम्राज्यों को भी झुकाया जा सकता है। उनकी यह यात्रा एक बैरिस्टर से महात्मा बनने की नहीं, बल्कि एक व्यक्ति से एक विचार बनने की है, जो आज भी मानवता को राह दिखा रहा है।

डॉ० जितेन्द्र प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर
भूगोल विभाग

अक्टूबर माह
के
महत्वपूर्ण दिवस

अक्टूबर माह के महत्वपूर्ण दिवस

क्र०सं०	तिथि	दिवस	विवरण
1.	1 अक्टूबर	अंतर्राष्ट्रीय कॉफ़ी दिवस	अंतर्राष्ट्रीय कॉफी दिवस एक ऐसा अवसर है जिसका उपयोग कॉफी को एक पेय के रूप में बढ़ावा देने और मनाने के लिए किया जाता है, और अब दुनिया भर में कई जगहों पर इसके आयोजन होते हैं। पहली आधिकारिक तारीख 1 अक्टूबर 2015 थी, जैसा कि तत्कालीन अंतर्राष्ट्रीय कॉफी संगठन ने सहमति व्यक्त की थी और इसे मिलान में लॉन्च किया गया था।
		विश्व शाकाहारी दिवस	हर साल 1 अक्टूबर को मनाया जाता है, जिसे नॉर्थ अमेरिकन वेजिटेरियन सोसाइटी द्वारा 1977 में स्थापित किया गया था। इस दिन का उद्देश्य शाकाहार के स्वास्थ्य, पर्यावरणीय और नैतिक लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और शाकाहारी जीवन शैली को बढ़ावा देना है।
		अंतर्राष्ट्रीय संगीत दिवस	विश्व संगीत दिवस को "फेटे डी ला म्यूजिक" के नाम से भी जाना जाता है। इसका अर्थ है "संगीत उत्सव"। विश्व संगीत दिवस के अलावा इसे संगीत समारोह के रूप में भी जाना जाता है। विश्व संगीत दिवस कुल 110 देशों में ही मनाया जाता है ।
2.	2 अक्टूबर	गांधी जयंती (अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस)	गांधी जयंती, जो 2 अक्टूबर को मनाई जाती है, को महात्मा गांधी की जयंती के सम्मान में मनाया जाता है और इसी दिन को संयुक्त राष्ट्र द्वारा 'अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस' के रूप में भी घोषित किया गया है। इस दिवस को दुनिया भर में अहिंसा और शांति के महत्व को बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है।
		लाल बहादुर शास्त्री की जयंती	लाल बहादुर शास्त्री की जयंती हर साल 2 अक्टूबर को मनाई जाती है, जो भारत के दूसरे प्रधानमंत्री थे। इस दिन को उनके सादगीपूर्ण जीवन, ईमानदारी और "जय जवान, जय किसान" जैसे नारों के लिए याद किया जाता है।
3.	3 अक्टूबर	विश्व मुस्कान दिवस	विश्व मुस्कान दिवस हर साल अक्टूबर के पहले शुक्रवार को मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य मुस्कुराहट और दयालुता के कार्यों को बढ़ावा देना है। इसकी शुरुआत 1999 में हार्वे बॉल ने की थी, जिन्होंने प्रसिद्ध स्माइली चेहरे का आविष्कार किया था। इस दिन लोग मुस्कुराहट के फायदे बताते हैं और दयालुता के काम करते हैं।

क्र०सं०	तिथि	दिवस	विवरण
3.	3 अक्टूबर	विश्व संयम दिवस	विश्व संयम दिवस हर साल 3 अक्टूबर को मनाया जाता है। यह दिन लोगों को शराब छोड़ने और नशा मुक्त जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करने के साथ-साथ संयम आंदोलनों के इतिहास को जानने के लिए समर्पित है। इस दिन का उद्देश्य लोगों को स्वस्थ, सुरक्षित और सफल जीवन जीने के लिए प्रेरित करना है।
4.	4 अक्टूबर	विश्व पशु दिवस	विश्व पशु दिवस पशु अधिकारों और कल्याण के लिए कार्रवाई का एक अंतरराष्ट्रीय दिवस है, जो हर साल 4 अक्टूबर को मनाया जाता है, जो जानवरों के संरक्षक संत, फ्रांसिस ऑफ असीसी का पर्व है। विश्व पशु दिवस आंदोलन को कई मशहूर हस्तियों द्वारा समर्थित और समर्थन किया जाता है, जैसे कि एनेका स्वेन्स्का, ब्रायन धन्य और मेलानी सी।
5.	5 अक्टूबर	विश्व शिक्षक दिवस	विश्व शिक्षक दिवस 5 अक्टूबर को संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में मनाया जाता है। इस दिन आध्यापकों को सामान्य रूप से और कतिपय कार्यरत एवं सेवानिवृत्त शिक्षकों को उनके विशेष योगदान के लिये सम्मानित किया जाता है।
6.	6 अक्टूबर	विश्व आवास दिवस	विश्व पर्यावास दिवस प्रत्येक वर्ष अक्टूबर माह के प्रथम सोमवार को मनाया जाता है आधिकारिक तौर पर संयुक्त राष्ट्र ने इसे वर्ष 1986 में प्रथम बार मनाया इसको मनाने का उद्देश्य हमारे शहरों एवं कस्बों की स्थिति का पता करना तथा आश्रय हेतु पर्याप्त मानव अधिकार की आवश्यकता की पूर्ति सुनिश्चित करना है।
		विश्व सेरेब्रल पाल्सी दिवस	विश्व सेरेब्रल पाल्सी दिवस का उद्देश्य सेरेब्रल पाल्सी (सीपी) से पीड़ित लोगों और उनके परिवारों के लिए जागरूकता बढ़ाना, उनके सामने आने वाली चुनौतियों को उजागर करना और एक अधिक समावेशी समाज की वकालत करना है। इसे सेरेब्रल पाल्सी एलायंस द्वारा 2012 में शुरू किया गया था।
7.	7 अक्टूबर	विश्व कपास दिवस	यह दिन कपास के आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय महत्व को उजागर करने और कपास क्षेत्र की दृश्यता बढ़ाने के लिए मनाया जाता है, खासकर अल्प विकसित देशों के लिए। इस दिन की शुरुआत 2019 में विश्व व्यापार संगठन (WTO) और कॉटन फोर (बेनीन, बुर्किना फासो, चाड और माली) देशों की पहल पर हुई थी।

क्र०सं०	तिथि	दिवस	विवरण
8.	8 अक्टूबर	भारतीय वायु सेना दिवस	भारतीय वायुसेना की स्थापना 8 अक्टूबर 1932 को ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीय विमानन कोर के रूप में की गई थी, जिसका उद्देश्य भारतीय सेना को हवाई सहायता प्रदान करना था। जिसके बाद से ही प्रतिवर्ष इस दिन को वायु सेना दिवस के रूप में मनाया जाता है।
9.	9 अक्टूबर	विश्व डाक दिवस	9 अक्टूबर, 1874 को 'यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन' के गठन हेतु बर्न, स्विटजरलैण्ड में 22 देशों ने एक संधि पर हस्ताक्षर किया था इसीकारण विश्व डाक दिवस मनाने के लिए यह दिन चुना गया।
10.	10 अक्टूबर	विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस	यह दिवस मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने, इस विषय पर खुली बातचीत को प्रोत्साहित करने और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे लोगों के समर्थन के प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है।
		विश्व मृत्युदंड विरोधी दिवस	यह दिन दुनिया भर में मृत्युदंड को समाप्त करने के लिए वैश्विक स्तर पर जागरूकता बढ़ाने और अभियान चलाने के लिए मनाया जाता है। इस दिन को यूरोप परिषद द्वारा 2007 में घोषित किया गया था।
11.	11 अक्टूबर	अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस	अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित एक अंतर्राष्ट्रीय दिवस है और इसका उद्देश्य बालिकाओं के अधिकारों को बढ़ावा देना, उनके सशक्तिकरण और दुनिया भर में उनके सामने आने वाली अनूठी चुनौतियों को उजागर करना है।
12.	12 अक्टूबर	अंतर्राष्ट्रीय निराशा के क्षण चीख दिवस	इस दिन का उद्देश्य लोगों को दबी हुई भावनाओं और तनाव को बाहर निकालने के लिए प्रोत्साहित करना है, और इसका जश्न मनाने का एक तरीका दोपहर में 30 सेकंड तक चिल्लाना है। यह दिन तनाव से राहत पाने के लिए चीखने की "रेचक शक्ति" को अपनाने के बारे में है।
13.	13 अक्टूबर	आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस	आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस एक अंतर्राष्ट्रीय दिवस है जो प्रत्येक नागरिक और सरकार को अधिक आपदा-प्रतिरोधी समुदायों और राष्ट्रों के निर्माण में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता है।
14.	14 अक्टूबर	एडा लवलेस दिवस	एडा लवलेस दिवस हर साल अक्टूबर के दूसरे मंगलवार को मनाया जाता है। यह दिन विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (STEM) के

क्र०सं०	तिथि	दिवस	विवरण
14.	14 अक्टूबर		क्षेत्र में महिलाओं के योगदान का जश्न मनाने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय उत्सव है। यह 19वीं सदी की गणितज्ञ और दुनिया की पहली कंप्यूटर प्रोग्रामर, एडा लवलेस को श्रद्धांजलि देता है, और STEM में महिलाओं और लड़कियों को प्रेरित करने के लिए शुरू किया गया था।
		विश्व मानक दिवस	प्रत्येक वर्ष 14 अक्टूबर को आईईसी, आईएसओ और आईटीयू के सदस्य विश्व मानक दिवस मनाते हैं, जो विश्व भर के हजारों विशेषज्ञों के सहयोगात्मक प्रयासों को श्रद्धांजलि देने का एक साधन है, जो स्वैच्छिक तकनीकी समझौतों को विकसित करते हैं, जिन्हें अंतर्राष्ट्रीय मानकों के रूप में प्रकाशित किया जाता है।
15.	15 अक्टूबर	वैश्विक हाथ धुलाई दिवस	यह दिन साबुन और पानी से हाथ धोने के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाने और बीमारियों को रोकने के प्रभावी और किफायती तरीके के रूप में इसे बढ़ावा देने के लिए समर्पित है।
16.	16 अक्टूबर	विश्व खाद्य दिवस	विश्व खाद्य दिवस संयुक्त राष्ट्र संघ की 1945 में खाद्य एवं कृषि संगठन के स्थापना दिवस 16 अक्टूबर के सम्मान में विश्वभर में प्रतिवर्ष मनाया जाता है। इसके अतिरिक्त वर्ल्ड फ़ूड प्रोग्राम और अंतर्राष्ट्रीय कृषि विकास कोष द्वारा भी इसे व्यापक रूप से मनाया जाता है।
		विश्व शब्दकोश दिवस	यह दिन महान अमेरिकी कोशकार नोआ वेबस्टर के जन्मदिन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, जो अंग्रेजी भाषा में शब्दकोशों के जनक माने जाते हैं। यह दिन भाषा के महत्व को उजागर करता है और लोगों को अपनी शब्दावली को बेहतर बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है।
17.	17 अक्टूबर	अंतर्राष्ट्रीय गरीबी उन्मूलन दिवस	22 दिसंबर 1992 को पारित प्रस्ताव 47/196 के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 17 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय गरीबी उन्मूलन दिवस के रूप में घोषित किया। इस दिवस का उद्देश्य गरीबी में रहने वाले लोगों और व्यापक समाज के बीच समझ और संवाद को बढ़ावा देना है।
18.	18 अक्टूबर	राष्ट्रीय चॉकलेट कपकेक दिवस	राष्ट्रीय चॉकलेट कपकेक दिवस छोटे, मीठे चॉकलेट केक का जश्न मनाने के लिए है, जिसे लोग अपनी पसंद के अनुसार फ्रॉस्टिंग और टॉपिंग के साथ आनंद लेते हैं।

क्र०सं०	तिथि	दिवस	विवरण
19.	19 अक्टूबर	राष्ट्रीय एलजीबीटी केंद्र जागरूकता दिवस	राष्ट्रीय एलजीबीटी केंद्र जागरूकता दिवस पूरे देश में एलजीबीटी सामुदायिक केंद्रों के महत्वपूर्ण काम और सुरक्षित स्थान प्रदान करने के लिए मनाया जाता है। यह दिन इन केंद्रों द्वारा प्रदान किए जाने वाले समर्थन, सेवाओं और सशक्तिकरण का सम्मान करने के लिए समर्पित है।
20.	20 अक्टूबर	विश्व सांख्यिकी दिवस	विश्व सांख्यिकी दिवस आँकड़ों का जश्न मनाने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय दिवस है। यह दिवस संयुक्त राष्ट्र सांख्यिकी आयोग के मार्गदर्शन में आयोजित किया जाता है। यह पहली बार 20 अक्टूबर 2010 को मनाया गया था। यह दिवस हर पांच साल में मनाया जाता है।
		अंतर्राष्ट्रीय शेफ़ दिवस	यह एक परंपरा है जिसकी शुरुआत 2004 में दिवंगत शेफ डॉ. बिल गैलाघर ने हमारे पाककला पेशे को सम्मान देने और अगली पीढ़ी को प्रेरित करने के लिए की थी। यह दिन शेफ़्स का सम्मान करता है और स्वस्थ भोजन के प्रति जागरूकता फैलाता है।
21.	21 अक्टूबर	पुलिस स्मृति दिवस	पुलिस स्मृति दिवस हर साल 21 अक्टूबर को उन 10 पुलिसकर्मियों को श्रद्धांजलि देने के लिए मनाया जाता है, जो 1959 में लद्दाख के हॉट स्प्रिंग्स में लापता पुलिस कर्मियों को खोजने गए पुलिस दल पर चीनी सैनिकों द्वारा घात लगाकर किए गए हमले में मारे गए थे।
22.	22 अक्टूबर	गुजराती नव वर्ष (बेस्तु वरस)	गुजराती नव वर्ष, जिसे बेस्तु वरस भी कहते हैं, दिवाली के अगले दिन मनाया जाता है और यह हिंदू कैलेंडर के अनुसार कार्तिक माह की प्रतिपदा तिथि को आता है। यह विक्रम संवत कैलेंडर के अनुसार नए साल की शुरुआत का प्रतीक है। इस दिन गुजराती समुदाय के लोग नए वित्तीय वर्ष की शुरुआत के लिए चोपड़ा पूजन करते हैं और परिवार के साथ समृद्धि की कामना करते हैं।
		अंतर्राष्ट्रीय हकलाना जागरूकता दिवस	अंतरराष्ट्रीय हकलाहट जागरूकता दिवस सबसे पहले 1998 में आयोजित किया गया था। हकलाहट को सामाजिक चिंता मानते हुए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उठाने का फैसला लिया गया।
23.	23 अक्टूबर	अंतर्राष्ट्रीय हिम तेंदुआ दिवस	पहला अंतर्राष्ट्रीय हिम तेंदुआ दिवस 23 अक्टूबर 2014 को मनाया गया था जिसका उद्देश्य था अवैध शिकार रोकना और पर्वत श्रृंखलाओं में रहने

क्र०सं०	तिथि	दिवस	विवरण
			वाले समुदायों के प्रयासों को मजबूत करना, जहां ये बिल्लियां रहती हैं, ताकि वे जंगली आवासों की सुरक्षा के लिए मिलकर काम कर सकें।
24.	24 अक्टूबर	संयुक्त राष्ट्र दिवस	संयुक्त राष्ट्र दिवस विश्व प्रतिवर्ष 24 अक्टूबर को लोगों को संयुक्त राष्ट्र संस्थान के उद्देश्यों एवं उपलब्धियों की जानकारी देने हेतु मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र दिवस संयुक्त राष्ट्र सप्ताहिक कार्यक्रमों की श्रंखला में 20 से 26 अक्टूबर के मध्य मनाया जाता है।
		विश्व पोलियो दिवस	विश्व पोलियो दिवस की स्थापना रोटरी इंटरनेशनल द्वारा जोनास साल्क के जन्म की स्मृति में की गई थी, जिन्होंने पोलियोमाइलाइटिस के खिलाफ टीका विकसित करने वाली पहली टीम का नेतृत्व किया था।
25.	25 अक्टूबर	अंतर्राष्ट्रीय कलाकार दिवस	यह दिन कलाकारों और समाज में उनके योगदान का सम्मान करने के लिए है। यह दिन प्रसिद्ध कलाकार पाब्लो पिकासो के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में भी मनाया जाता है, जिनका जन्म 25 अक्टूबर, 1881 को हुआ था।
26.	26 अक्टूबर	अंतर्राष्ट्रीय इंटरसेक्स जागरूकता दिवस	यह दिवस इंटरसेक्स व्यक्तियों के मानवाधिकारों के मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने और शारीरिक स्वायत्तता व आत्मनिर्णय के अधिकारों की वकालत करने के लिए मनाया जाता है। यह दिन 1996 में अमेरिकी बाल चिकित्सा अकादमी के सम्मेलन में पहली इंटरसेक्स कार्यकर्ताओं की रैली की वर्षगांठ का प्रतीक है।
27.	27 अक्टूबर	विश्व दृश्य-श्रव्य विरासत दिवस	इस दिवस का आयोजन यूनेस्को द्वारा 2005 से किया जा रहा है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को अभिलिखित ध्वनि और दृश्य-श्रव्य दस्तावेजों के महत्व और उनके संरक्षण के प्रति जागरूक बनाना है।
		भारतीय सेना पैदल सेना दिवस	भारतीय सेना का पैदल सेना दिवस 1947 में श्रीनगर हवाई अड्डे पर पैदल सेना के सैनिकों के उतरने की याद में मनाया जाता है। इस ऐतिहासिक घटना ने श्रीनगर को पाकिस्तानी आक्रमणकारियों से बचाने में मदद की और 1947 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुई।
28.	28 अक्टूबर	अंतर्राष्ट्रीय एनीमेशन दिवस	यह दिन एनीमेशन की कला का जश्न मनाने और इसके पीछे के कलाकारों और तकनीशियनों को सम्मानित करने के लिए 2002 में ASIFA द्वारा शुरू किया गया

क्र०सं०	तिथि	दिवस	विवरण
			था। यह एनीमेशन के महत्व को उजागर करता है, जो मनोरंजन और शिक्षा दोनों का एक शक्तिशाली माध्यम है।
29.	29 अक्टूबर	विश्व सोरायसिस दिवस	विश्व सोरायसिस दिवस का उद्देश्य सोरायसिस और सोरायटिक गठिया से पीड़ित लोगों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और उन्हें एकजुट होकर समर्थन देना है। यह दिन बीमारी के बारे में जानकारी फैलाने, कलंक कम करने और बेहतर उपचार व अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के लिए मनाया जाता है।
		विश्व स्ट्रोक दिवस	विश्व स्ट्रोक दिवस का उद्देश्य स्ट्रोक के जोखिमों, लक्षणों और रोकथाम के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। इस दिन को दुनिया भर में स्ट्रोक से संबंधित जागरूकता फैलाने और निवारक उपायों को बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है।
30.	30 अक्टूबर	विश्व मितव्ययिता दिवस	विश्व मितव्ययिता दिवस बचत और वित्तीय अनुशासन को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है, जो लोगों को संसाधनों का बुद्धिमानी से उपयोग करने और भविष्य के लिए वित्तीय सुरक्षा बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है।
31.	31 अक्टूबर	राष्ट्रीय एकता दिवस को (सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयन्ती)	राष्ट्रीय एकता दिवस को सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयन्ती को चिह्नित करने के लिए मनाया जाता है, जिनकी भारत के राजनीतिक एकीकरण में प्रमुख भूमिका थी। इस दिन का आरम्भ भारत सरकार द्वारा सन् 2014 में किया गया था।
		राष्ट्रीय संकल्प दिवस	राष्ट्रीय संकल्प दिवस इंदिरा गांधी की पुण्यतिथि पर मनाया जाता है, जो 31 अक्टूबर को है। यह दिन देश की एकता और अखंडता के लिए उनके बलिदान की याद दिलाता है।

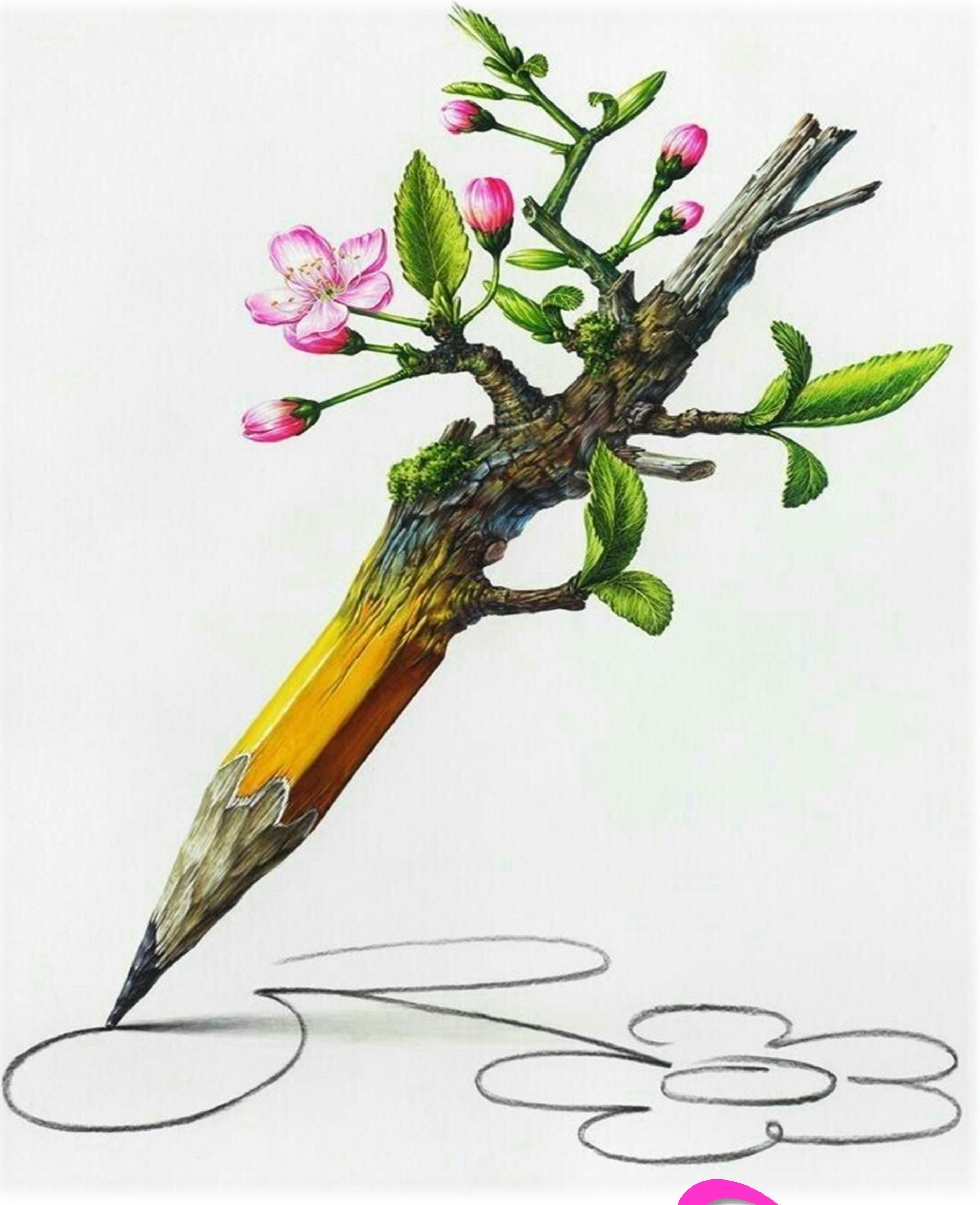

कलाकृति

अनुभाग

कलाकृतियाँ...

चित्रण: बबीता
बी०एस-सी० पंचम सेमेस्टर

"रंगों में वह जादू है जो रंगने वाले, भीगने वाले और देखने वाले तीनों के दिल को विभोर कर देता है।"

कलाकृतियाँ...

चित्रण: तनुजा शर्मा
बी०ए० तृतीय सेमेस्टर

"कविता वह सुरंग है जिसमें से गुज़र कर इन्सान एक दुनिया को छोड़ कर दूसरे दुनिया में प्रवेश करता है।"

कलाकृतियाँ...

चित्रण: डॉ० शैफाली सक्सेना
असिस्टेंट प्रोफेसर
वनस्पति विज्ञान विभाग

कलाकृतियाँ...

चित्रण: डॉ० शैफाली सक्सेना
असिस्टेंट प्रोफेसर
वनस्पति विज्ञान विभाग

लेंस के पीछे

छायाकार: डॉ० कविन्द्र भट्ट

आदि कैलाश...

उत्तराखण्ड के शान्त परिदृश्य में बसे **आदि कैलाश**, जिसे अक्सर **'छोटा कैलाश'** भी कहा जाता है, हिंदू पौराणिक कथाओं में अत्यधिक महत्व रखता है। ऐसा माना जाता है कि यह हिंदू धर्म के प्रमुख देवताओं में से एक, भगवान शिव का निवास स्थान है। तीर्थयात्री भगवान शिव का आशीर्वाद पाने, शांत वातावरण में ध्यान लगाने और आसपास व्याप्त दिव्य जुड़ाव का अनुभव करने के लिए इस पवित्र स्थल पर आते हैं।

ॐ पर्वत...

ॐ पर्वत, जिसे 'आदि कैलाश' के नाम से भी जाना जाता है, उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ जिले में स्थित एक पवित्र पर्वत है। यह पर्वत अपनी अनोखी विशेषता के कारण दुनियाभर के तीर्थयात्रियों, साहसिक पर्यटकों और पर्वतारोहियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। इस पर्वत की अनूठी बात यह है कि इसकी हिमाच्छादित चोटियों पर प्राकृतिक रूप से 'ॐ' का चिन्ह अंकित है, जो भारतीय संस्कृति और धार्मिकता का प्रतीक है।

पार्वती कुण्ड...

भारत के समृद्ध इतिहास और पौराणिक कथाओं का प्रतीक, **पार्वती कुण्ड**, उत्तराखण्ड में स्थित है। हिंदू देवी पार्वती से जुड़ा यह ऐतिहासिक कुण्ड आध्यात्मिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक समृद्धि का संगम है। इसके मनमोहक दृश्य और आध्यात्मिक मान्यताएँ, पर्यटकों को एक शांत और रोमांचक यात्रा प्रदान करती हैं। यह आध्यात्मिक और प्राकृतिक आश्रय एक अनूठा दर्शनीय अनुभव प्रदान करता है जो एक अमिट छाप छोड़ता है। पार्वती कुण्ड ओम पर्वत के तल पर स्थित है, जो एक प्राकृतिक चट्टान संरचना वाला पर्वत है जो हिंदू पवित्र प्रतीक ' ॐ' जैसा दिखता है।

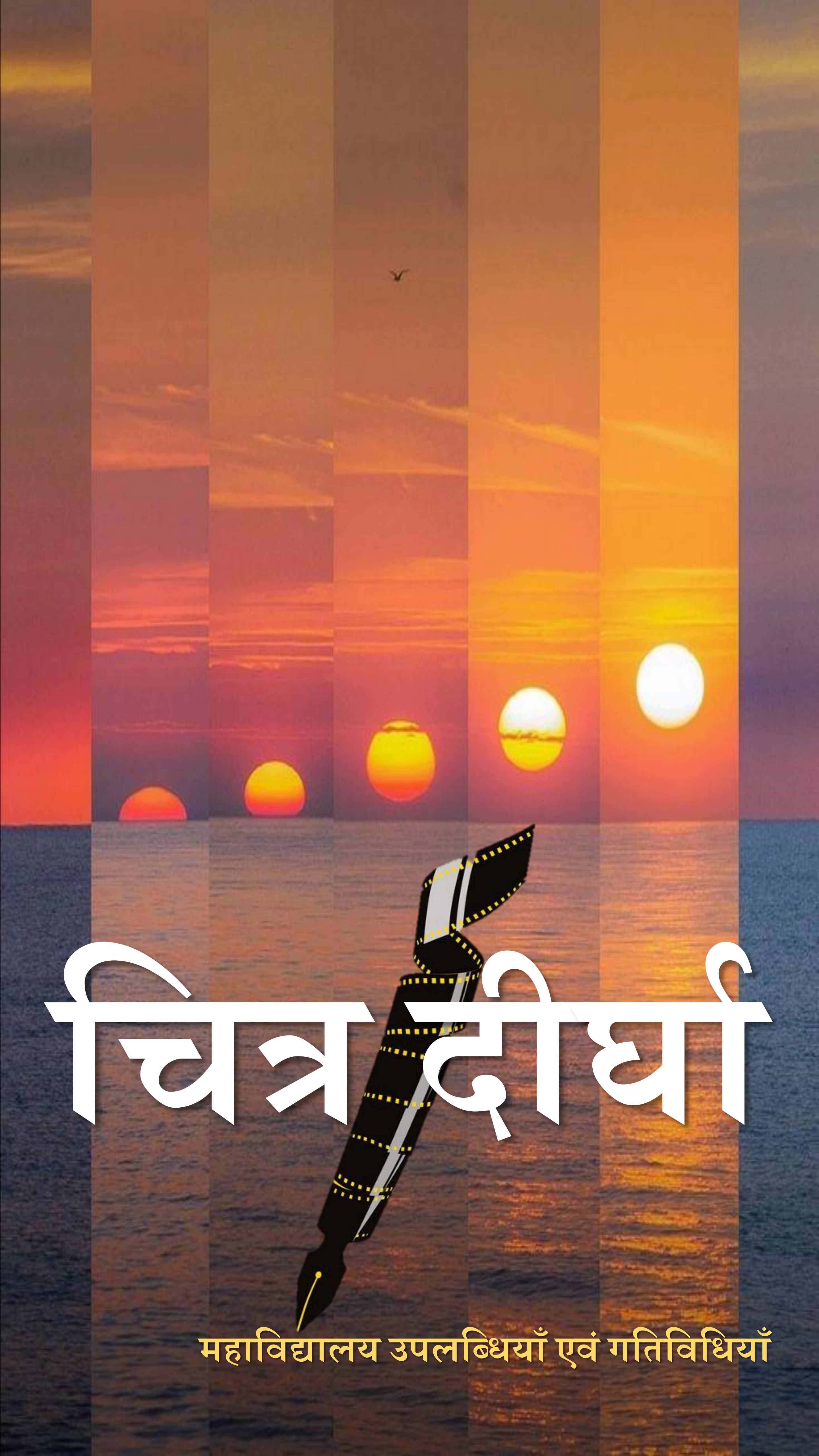
चित्र दीर्घा
महाविद्यालय उपलब्धियाँ एवं गतिविधियाँ

कृमि मुक्ति दिवस जागरूकता कार्यक्रम

दिनाँक : 09.10.2025

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुणीधार, मानिला में प्रभारी प्राचार्य डॉ० गोरखनाथ की अध्यक्षता में एन०एस०एस० कार्यक्रम अधिकारी डॉ० अंजू निगम द्वारा **"राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन"** के अंतर्गत स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से **"कृमि मुक्ति दिवस जागरूकता कार्यक्रम"** का आयोजन किया गया। इस उपलक्ष में 19 वर्ष से कम आयु के समस्त छात्र-छात्राओं को एल्बेंडाज़ोल टैबलेट वितरित की गई।

एक-दिवसीय एन०एस०एस० शिविर

दिनाँक : 09.10.2025

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुणीधार, मानिला में प्रभारी प्राचार्य डॉ० गोरखनाथ की अध्यक्षता में एन०एस०एस० कार्यक्रम अधिकारी डॉ० अंजू निगम द्वारा **"राष्ट्रीय सेवा योजना"** के अंतर्गत **"एक-दिवसीय शिविर"** का आयोजन किया गया। इस उपलक्ष में समस्त छात्र-छात्राओं को **"मानव-वन्यजीव संघर्ष"** पर जानकारी दी गई एवं **डब्ल्यू०डब्ल्यू०एफ० तितली ट्रस्ट** के सहयोग से **वन्यजीव संरक्षण पर आधारित पोस्टर प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया।

शिक्षक-अभिभावक संघ गठन

दिनाँक : 13.10.2025

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुणीधार, मानिला में प्राचार्य पर प्रोफे० जी० एस० यादव की अध्यक्षता में पी०टी०ए० प्रभारी डॉ० जितेन्द्र प्रसाद द्वारा **शिक्षक-अभिभावक संघ का गठन** एवं **वार्षिक बैठक** आयोजित की गई। बैठक में उपस्थित समस्त अभिभावक गणों द्वारा सर्वसम्मति से **श्री बिशन दत्त शर्मा जी को पी०टी०ए० अध्यक्ष** पद हेतु चुना गया।

अन्तर्महाविद्यालयी महिला वॉलीबॉल प्रतियोगिता

दिनाँक : 15.10.2025 से 16.10.2025

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुणीधार, मानिला में ***"दो-दिवसीय सोबन सिंह जीना अन्तर्महाविद्यालयी महिला वॉलीबॉल प्रतियोगिता"*** का उद्घाटन सल्ट क्षेत्र के लोकप्रिय विधायक महेश जीना के कर कमलों द्वारा किया गया। टूर्नामेंट में विभिन्न महाविद्यालयों की 11 टीमों द्वारा प्रतिभाग किया गया। **नारायणनगर** की टीम ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए जीत हासिल की और **प्रथम स्थान** प्राप्त किया। प्रतियोगिता प्राचार्य डॉ० जी० एस० यादव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। क्रीड़ाधिकारी डॉ० पीताम्बर दत्त पन्त द्वारा प्रतियोगिता का आयोजन एवं संचालन किया गया।

मासिक ई-पत्रिका *'मानिला वाणी'* का शुभारम्भ

दिनाँक : 15.10.2025

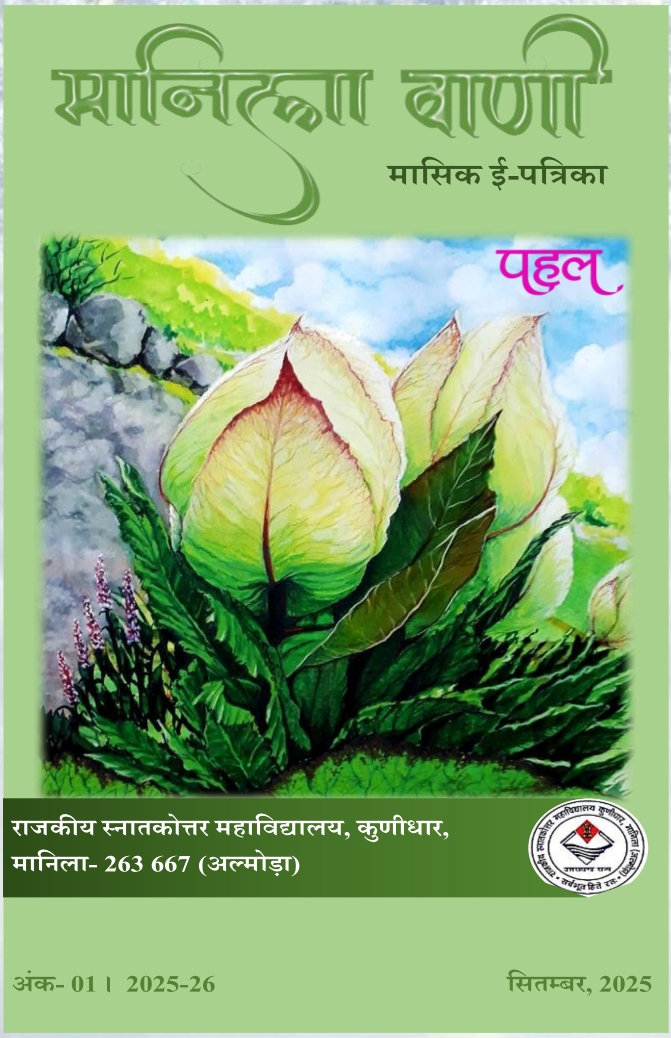

सोबन सिंह जीना अन्तर्महाविद्यालयी महिला वॉलीबॉल प्रतियोगिता के उद्घाटन समारोह सत्र में **महाविद्यालय की ई-पत्रिका** ***'मानिला वाणी'*** के प्रथम अंक ***'पहल'*** का माननीय विधायक महोदय श्री महेश जीना जी के करकमलों द्वारा विमोचन किया गया। मासिक पत्रिका की प्रधान संपादक डॉ० शैफाली सक्सेना और सह-संपादक डॉ० जितेन्द्र प्रसाद ने बताया कि यह ई-पत्रिका सितम्बर माह से प्रतिमाह महाविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट पर छात्र-छात्राओं और जनसामान्य के लिए उपलब्ध होगी।

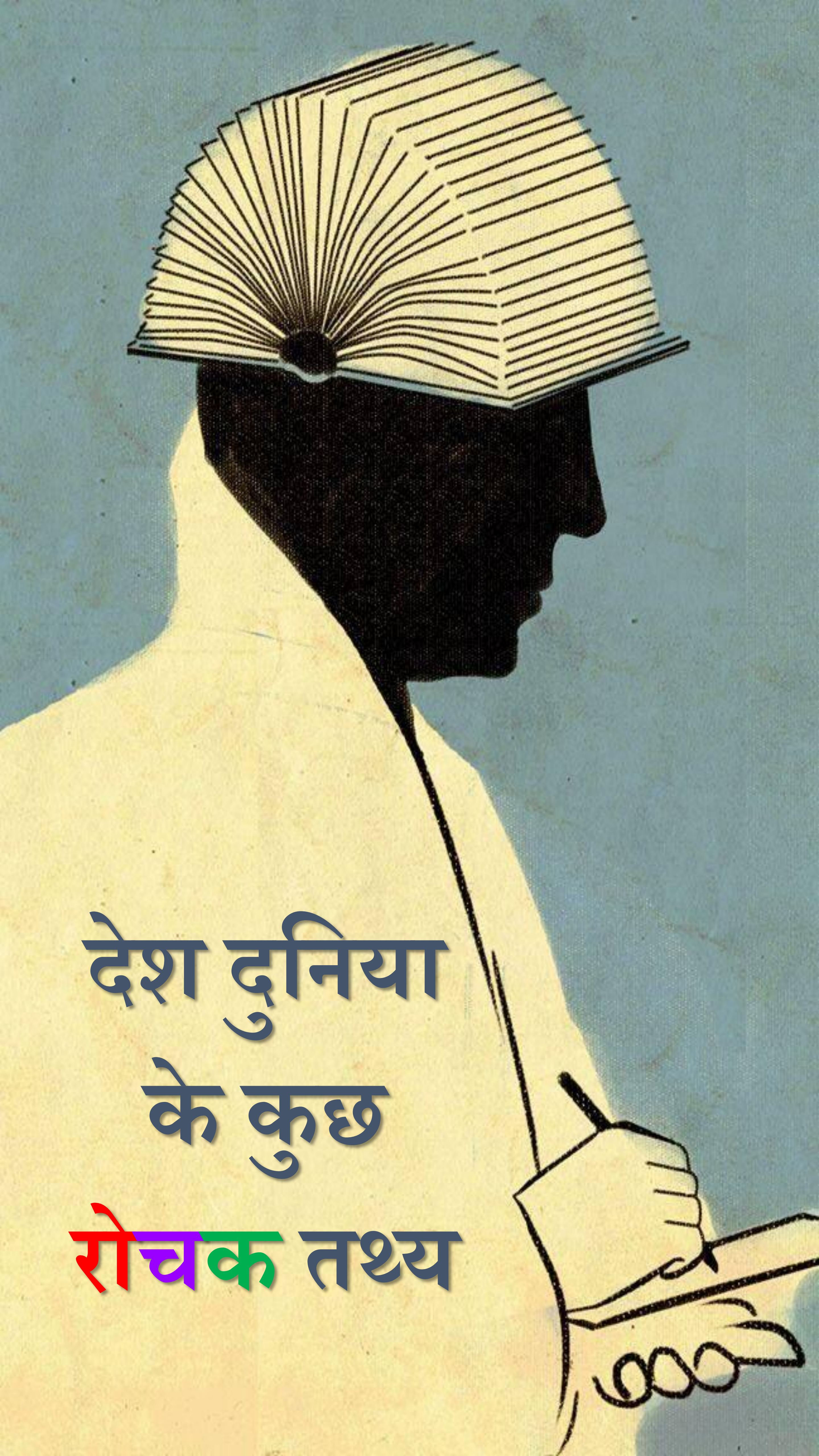
देश दुनिया
के कुछ
रोचक तथ्य

thefactwala.in

₹500 की वो नोट मत लीजिए, जिसमें हरि पट्टी गांधीजी नजदीक बनी हो, क्योंकि वो नकली हैं, आप वहीं नोट लीजिए जिसमें हरि पट्टी RBI गवर्नर के सिग्नेचर के पास हैं | इस मैसेज को आप अपने परिवार और दोस्तों तक पहुंचाए |

भारत के पास विश्व स्तर पर मसालों का सबसे बड़ा उत्पादक होने का प्रतिष्ठित खिताब है। अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण संगठन (ISO) द्वारा मान्यता प्राप्त 109 सूचीबद्ध मसाला किस्मों में से लगभग 75 की खेती भारत करता है। जो दुनिया में सबसे अधिक है।

तिब्बत में 60 मीटर लंबी और 10 मीटर ऊँची एक रहस्यमयी दीवार के भीतर छिपी मिली 84,000 गुप्त किताबों की लाइब्रेरी! सदियों तक यह सीक्रेट लाइब्रेरी दुनिया की नजरों से छुपी रही थी! जैसे इतिहास खुद छुपा बैठा हो!

ईमेल का आविष्कार किसी अमेरिकी ने नहीं बल्कि एक 14 वर्षीय भारतीय बालक शिव अय्यादुरई ने 1978 में किया था।

दुनिया का सबसे छोटा सोने का ताला 41mg का है। जिसकी हाइट 3mm और इसकी परिधि सिर्फ 1cm है। इसे केरल के रहने वाले गणेश सुब्रमण्यम जी ने बनाया है।

IIT गुवाहाटी के छात्रों ने गाय के दूध से ऐसी बायोप्लास्टिक बोतल बनाई है जो 100% डीकंपोज़ हो जाती है और पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं पहुंचाती। यह प्लास्टिक का स्वदेशी विकल्प बन सकता है।

FACTIFIED
Yi&Fei Chen नाम के एक डिजाइनर ने एक ऐसी Gun बनाई है जो आंसुओं को Bullets में बदल सकती हैं।

केन्या की Nzambi Matee नाम की महिला ने प्लास्टिक को रिसाइकल कर ईट बनाई है। ये ईंटें सीमेंट की ईंटों से कहीं ज्यादा मजबूत हैं।

SAB 58
SAB 59
SAB 60
SAB 62
Harry Potter के रोल के लिए 17,000 से भी ज़्यादा बच्चो ने Audition दिया था।

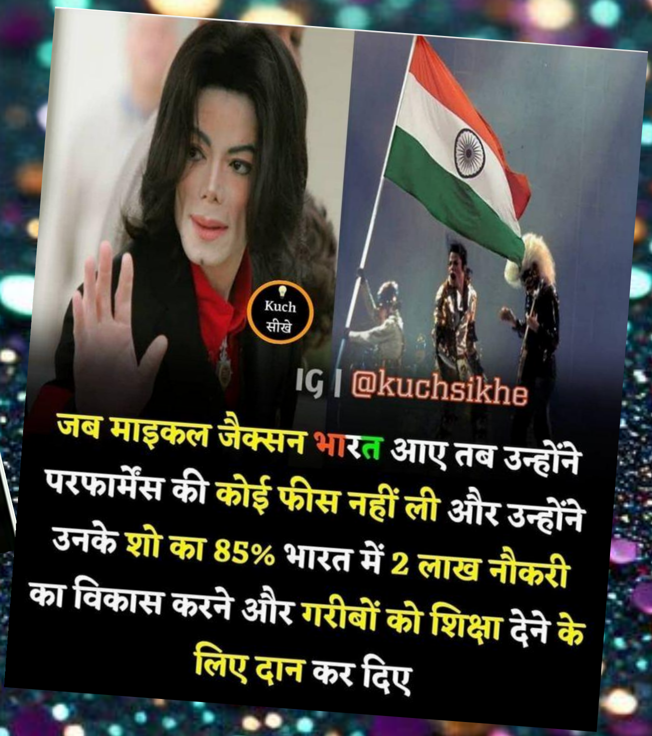
Kuch सीखे
IG | @kuchsikhe
जब माइकल जैक्सन भारत आए तब उन्होंने परफार्मेंस की कोई फीस नहीं ली और उन्होंने उनके शो का 85% भारत में 2 लाख नौकरी का विकास करने और गरीबों को शिक्षा देने के लिए दान कर दिए

भारतीय GoAir एयरलाइन सिर्फ महिलाओं को ही नौकरी पर रखते हैं क्योंकि वह वजन में हल्की होती हैं जिसके कारण कंपनी 500,000 डॉलर की ईंधन की बचत करती है।

जेन गुडॉल पहली व्यक्ति थी जिन्होंने चिम्पांज़ियों को औज़ार बनाते और इस्तेमाल करते देखा। 1960 में तंज़ानिया के गोम्बे वन में उनके अवलोकनों ने साबित किया कि इंसान ही एकमात्र “औज़ार बनाने वाले जीव” नहीं हैं — इस खोज ने विज्ञान और मानवता दोनों की सोच बदल दी।

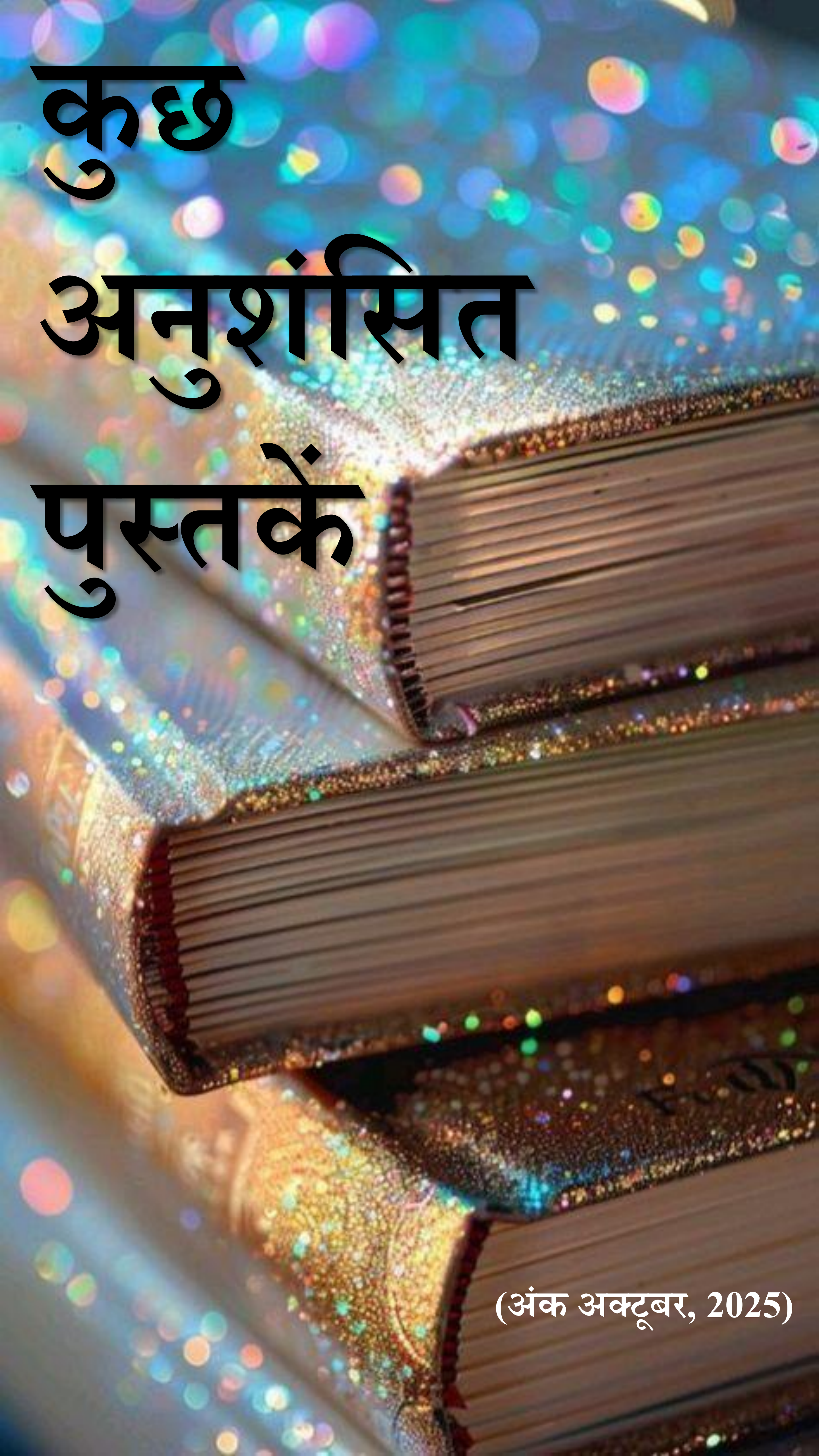

कुछ अनुशंसित पुस्तकें

(अंक अक्टूबर, 2025)

कुछ अनुशंसित पुस्तकें

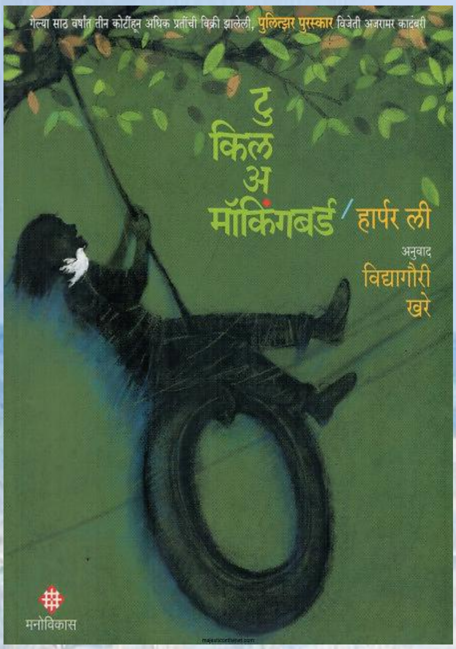

टु किल अ मॉकिंगबर्ड

लेखक: हार्पर ली

जितने ब्लूजेज़ को मारना चाहो मारो, अगर मार सकते हो, लेकिन याद रखना मॉकिंगबर्ड को मारना पाप है।' यह एक वकील की अपने बच्चों को सलाह है क्योंकि वह हार्पर ली के क्लासिक उपन्यास के असली मॉकिंगबर्ड का बचाव करता है - एक अश्वेत व्यक्ति जिस पर एक गोरी लड़की के बलात्कार का झूठा आरोप लगाया गया है। हार्पर ली ने 1930 के दशक के डीप साउथ में नस्ल और वर्ग के प्रति वयस्कों के रवैये की अतार्किकता का भरपूर हास्य के साथ अन्वेषण किया है। पूर्वाग्रह, हिंसा और पाखंड में डूबे एक शहर की अंतरात्मा न्याय के लिए एक व्यक्ति के संघर्ष की सहनशक्ति से चुभती है। लेकिन इतिहास का भार केवल इतना ही सहन करेगा।

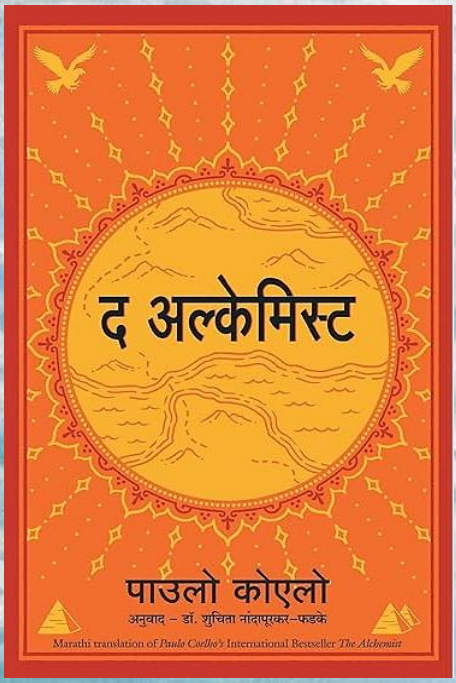

द अल्केमिस्ट

लेखक: पाउलो कोएलो

"द अल्केमिस्ट" सैंटियागो की कहानी कहता है, जो एक युवा अंडालूसी चरवाहा है जो मिस्र में गड़े हुए खजाने का सपना देखता है और उसे ढूँढ़ने के लिए एक चुनौतीपूर्ण यात्रा पर निकल पड़ता है। एक दंतकथा की सादगी और प्रतीकात्मक समृद्धि के साथ, कोएलो का उपन्यास गड़े हुए खजाने की खोज और आध्यात्मिक खोज दोनों है, जिसमें एक नायक अपने मार्गदर्शक शिक्षकों की मदद से रास्ते में आने वाली चुनौतियों पर विजय प्राप्त करता है। पाउलो कोएलो की पुस्तकों में कठिन - और मूल्यवान - सबक हैं, लेकिन उनकी अपील का एक बड़ा हिस्सा कोएलो द्वारा इन सबकों को नाटकीय रूप देने के तरीके से आता है।

पुस्तकालय में उपलब्ध

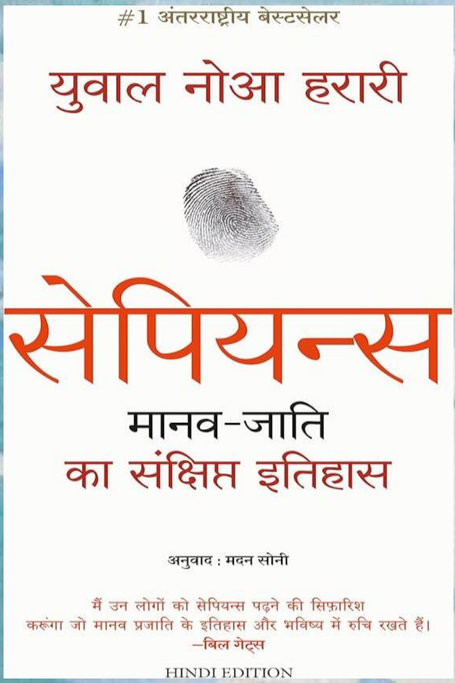

सेपियन्स

लेखक: युवाल नोआ हरारी

क्या हमें प्रतिभाशाली बनाता है? क्या हमें घातक बनाता है? क्या हमें बुद्धिमान बनाता है? युवाल नोआ हरारी इस अभूतपूर्व समय के लिए एकदम सही किताब में इंसान होने के बारे में हमारी सभी समझ को चुनौती देते हैं। पृथ्वी 4.5 अरब वर्ष पुरानी है। उस समय के एक छोटे से अंश में, अनगिनत प्रजातियों में से एक ने इस पर विजय प्राप्त की है: हम। इस साहसिक और उत्तेजक पुस्तक में, युवाल नोआ हरारी इस बात की पड़ताल करते हैं कि हम कौन हैं, हम यहाँ कैसे पहुँचे और हम कहाँ जा रहे हैं।

**नोट: अगले माह के अंक में कुछ अन्य पुस्तकें आपके समक्ष फिर से प्रस्तुत होंगी।*

रोजगार
समाचार
TV
LIVE
NEWS

देश में 2025 की आगामी परीक्षायें

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), रुड़की: परियोजना सहायकों के लिए भर्ती, आवेदन करने की अंतिम तिथि 29 अक्टूबर, 2025, तथा अनुसंधान एसोसिएट्स के लिए आवेदन करने की अंतिम तिथि 5 नवंबर और 15 नवंबर, 2025 है।

भारतीय वन्यजीव संस्थान (WII), देहरादून: तकनीशियनों और लैब अटेंडेंट के छह रिक्त पद उपलब्ध हैं। आवेदन की अंतिम तिथि 18 नवंबर, 2025 है।

रेलवे भर्ती बोर्ड (आरआरबी):

- **एनटीपीसी:** स्टेशन मास्टर, क्लर्क और अन्य पदों के लिए 8,850 रिक्त पद हैं। आवेदन करने की अंतिम तिथि 27 नवंबर, 2025 है।
- **जूनियर इंजीनियर:** 2,570 जूनियर इंजीनियरों की भर्ती, आवेदन करने की अंतिम तिथि 30 नवंबर, 2025 है।
- **प्रशिक्षु:** उत्तर पश्चिम रेलवे (आरआरसी एनडब्ल्यूआर) 2,094 प्रशिक्षुओं की भर्ती कर रहा है, आवेदन करने की अंतिम तिथि 2 नवंबर, 2025 है। उत्तर पूर्व रेलवे (रेलवे एनईआर) भी 1,104 प्रशिक्षुओं की भर्ती कर रहा है, आवेदन करने की अंतिम तिथि 15 नवंबर, 2025 है।

सीमा सुरक्षा बल (BSF): 391 कांस्टेबल (जनरल ड्यूटी) पदों के लिए 4 नवंबर, 2025 तक आवेदन स्वीकार किए जा रहे हैं।

तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम (ONGC): 2,623 प्रशिक्षुओं की भर्ती, आवेदन करने की अंतिम तिथि 6 नवंबर, 2025 है।

दिल्ली विकास प्राधिकरण (DDA): ग्रुप A, B और C के पदों के लिए 1,732 रिक्तियाँ हैं। आवेदन की अंतिम तिथि 5 नवंबर, 2025 है।

बिहार केंद्रीय कांस्टेबल चयन बोर्ड (CSBC): 4,128 कांस्टेबलों की भर्ती, आवेदन करने की अंतिम तिथि 5 नवंबर, 2025 है।

भारतीय सेना: 10+2 तकनीकी प्रवेश योजना (TES) के लिए रिक्तियाँ खुली हैं, आवेदन करने की अंतिम तिथि 13 नवंबर, 2025 है।

अधिक विवरण कैसे प्राप्त करें

- **रोजगार समाचार:** रोजगार समाचार आधिकारिक अधिसूचनाओं और उनकी तिथियों के लिए एक प्राथमिक स्रोत है।
- **परीक्षा पोर्टल:** करियर 360 और करियर पावरजैसी प्रतिष्ठित वेबसाइटें भी सरकारी नौकरियों के बारे में अद्यतन जानकारी प्रदान करती हैं।

‘हे नंदा! हे गौरा! कैलाशूँ की जात्रा’

हे नन्दा ! हे गौरा !
कैलाशूँ की जात्रा,
हे नन्दा, हे गौरा,
कैलाशों की जात्रा,
आ. आ.....

पटिनों भागिना, हे नन्दा भवानी,
सौंण भादों का मैहणा, सौरास की बारी,
लागिगे नि बाटा, यो भगति त्यारा,
यौ बाजा भंकौरा, सब त्यारा द्वारा,

हे नन्दा ! हे गौरा !
कैलाशूँ की जात्रा,
हे माता सुनन्दा, हे माता भवानी,
सौंण भादों का मैहणा, जात कि तैयारी,

हे देवि छाजिरौ चाँदी को छतरा,
भुज को पतला, हाथेकि पौंजिया,
देवि आ.....
चाँदी को छतरा, पाँव की पौलिया,
भोजि का पथरा, हाथों कि पौंछिया,
देवि.......... पावन करिदे, यो धरती सारी,
सुफल है जाया, मेरी नन्दा भवानी,

हे नन्दा ! हे गौरा !
कैलाशूँ की जात्रा,
हे माता सुनन्दा, हे माता भवानी,
सौंण भादों का मैहणा, जात कि तैयारी,

हे नन्दा, गल की हसुली, मौनि को जुन्याला,
स्योनि का संगाला, पूजला भूमियाला,
सोबनातु पाणि, पोनो का सुपाली,
देवि जात्रा आया, हे गौरा भवानी

हे नन्दा ! हे गौरा !
कैलाशूँ की जात्रा,
हे माता सुनन्दा, हे माता भवानी,
सौंण भादों का मैहणा, जाते कि तैयारी,

देवि.... भगतों की देवि, तुइमैं सकारी,
गायी माई माँ तू, छाया माँ करी,
पैटण लागि ग्ये, कैलाशे की बारी,
आशीष दी जाया, विनती हमारी,
सौंण भादो को मैहणा, सौरास की बारी,

हे नन्दा ! हे गौरा !
कैलाशूँ की जात्रा,
हे नन्दा, हे गौरा,
कैलाशूँ की जात्रा,
हे माता सुनन्दा, हे माता भवानी,
सौंण भादों का मैहणा, जात कि तैयारी।

- गायक दर्शन फर्स्वाण

“सा विद्या या विमुक्तये”

कवर एवं पत्रिका डिजाईन: डॉ० शैफाली सक्सेना